अन्दाज़-ए-जिगर

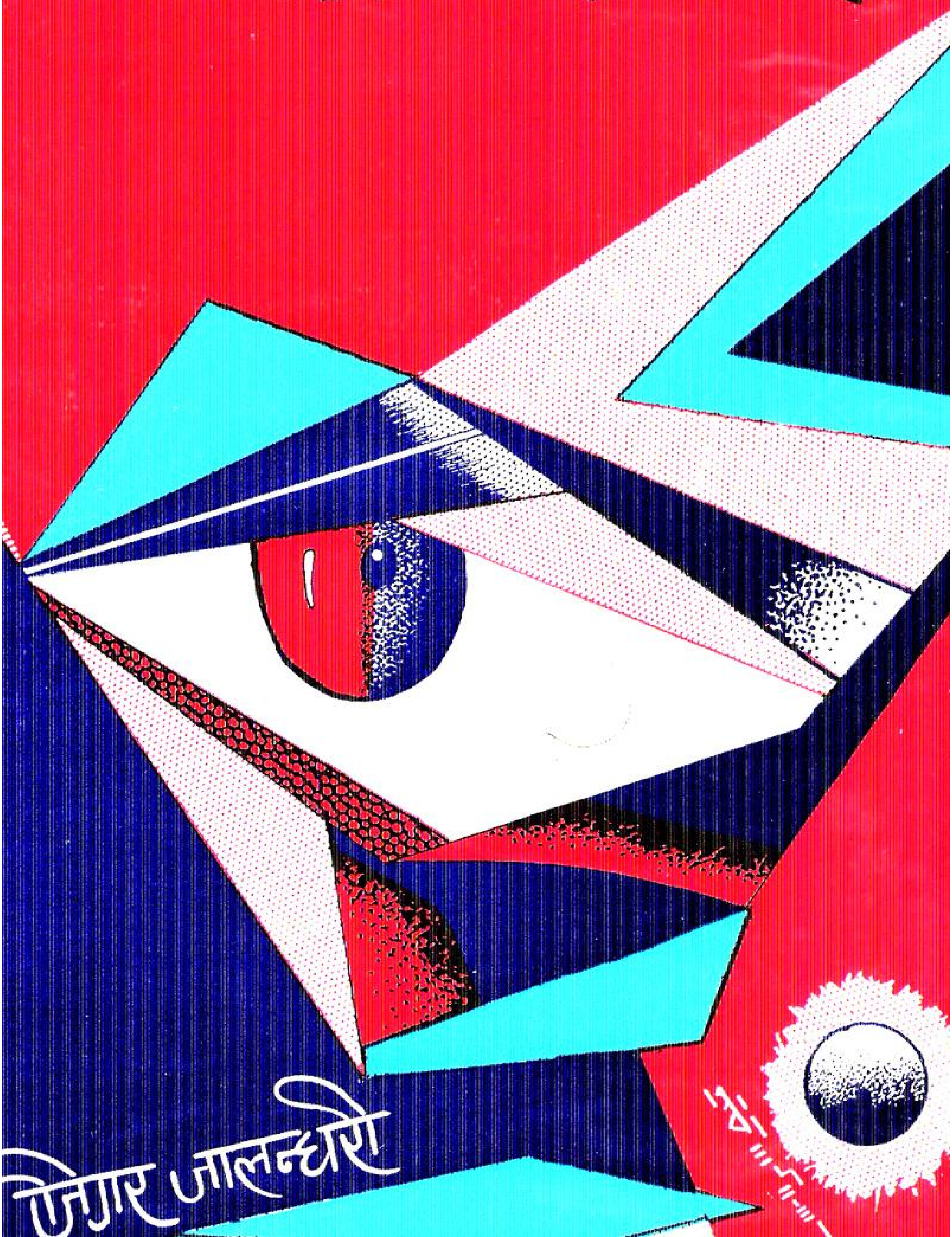

जिगर जालन्धरी

हमारा हाल सुन कर वो अगर इतने परेशां हैं,
हमारा हाल देखेंगे तो उनका हाल क्या होगा।

—जिगर जालन्धरी

उर्दू ग़ज़लें

अन्दाज़-ए-जिगर

जिगर जालन्धरी

प्रसिद्ध लेखकों के विचार

जनाब क़िबला जोश मलसियानी :—

अज़ीज़ जिगर जालन्धरी को मैं एक मुद्दत से जानने की तरह जानता हूं। वो मुझसे भी मुस्तफ़ीद होते रहे हैं और अदबी मशवरे भी हासिल करते रहे हैं। ज़बान और फ़न की तहक़ीक़ के शैदाई और हुस्ने-सुखन के फ़िदाई हैं। तबीयत शायरी के लिए बहुत मौज़ूं है। उनकी सही क़िस्म की मौज़ूनी-ए-तबा पेचीदा बहरों में भी सही कहने पर क़ादिर है।

वो तखय्युल और ज़बान को दोष-बदोष रख कर शे'र कहते हैं। नितायजे-अफ़कार में झोल बहुत कम होता है। इसकी वजह ये है कि वो जो कुछ कहते हैं सोच समझ कर कहते हैं। शेर बंदिश के लिहाज़ से ठोस और मजबूत होता है। हर क़िस्म की उरयानी और बाज़ारी ज़बान से बच कर शेर कहते हैं। जौहरे-क़ाबिल कहे जाने के मुस्तहिक़ हैं।

जनाब साहिर स्याल कोटी :—

शे'र के लिए अज़ीज़ जिगर की तबीयत निहायत मौज़ूं है। फ़न्ने-अरुज़ से भी गहरी दिलचस्पी और वाक़फ़ियत रखते हैं। वो सोच समझ कर शे'र कहते हैं जो महज़ क़ाफ़िया-पैमाई का नमूना नहीं होता बल्कि जान-दार होता है। मानवी खूबियों के साथ साथ ज़बान की सफ़ाई और सेहत का मुकम्मल तौर पर ख़याल रखते हैं। 'जिगर' शे'र के अयूबो-मुहासिन से खूब वाक़िफ़ हैं।

मौलाना अब्र अहसनी गन्नौरी :—

'जिगर' शे'र के मिज़ाज को एक तबीबे-हाज़िक़ की तरह जानते हैं। उन्हें अलफ़ाज़ के इस्तमाले-बर-महल का भी इरफ़ान है। 'जिगर' असरे-हाज़िर के ख़ुद-पसन्द शायरों में नहीं। उन्होंने शे'र कहने पर मेहनत की है। ये सीधा सादा शख़्स एक तूफ़ाने-बेकरां है। सब कुछ जानता है। किसी शोबा-ए-शे'र से बेख़बर नहीं।

जनाब क़ैस जालन्धरी :—

हज़रते 'जिगर' का कलाम मुहासिन का आईनादार होता है और मुआइब से पाक। कलाम में ख़ानदानी खायात के मुताबिक़ बाज़ारीपन और उरयानी नहीं बल्कि संजीदा और मतीन है। अन्दाज़-ए-बयां उलझनों से पाक है। आमद का क्या कहना-आवुर्द को नज़दीक फटकने नहीं देते। अक्सर अशयार तीरो-निश्तर होते हैं जो बग़ैर याद किए याद हो जाते हैं।

जनाब रत्न पंडोरीवी :—

जिगर का कलाम बड़ा दिल-नशीं, पुरकशिश और पुरअसर होता है। दिल को सरूर और आँख को नूर बख़शता है। कलाम में आली-मज़ामीन और नादिर ख़यालात पाए जाते हैं। 'जिगर जालन्धरी' की ज़बान देहलवी है।

जनाब अर्श मलसियानी :—

'जिगर जालन्धरी' कमसिन होने के बावजूद ख़ुश-गो सुख़न-तराज़ हैं। 'जिगर' के शे'र देखो-बिल्कुल कोई ज़बांदां बोल रहा है। ख़ित्ता-ए-पंजाब के शायरों में उनका नाम मुमताज है।

जनाब ख़ुमार बारा बंकवी :—

'जिगर' साहिब को ज़बानो-बयां पर क़ुदरत हासिल है। उनके यहां जज़्बा-ओ-फ़िक्र का इम्तज़ाज मिलता है जिससे दिलो-दिमाग़ दोनों मुतअस्सिर हुए बग़ैर नहीं रहते। मैंने हमेशा लोगों को उनके कलाम पर सर धुनते देखा है और मैं ख़ुद भी उनमें शरीक रहा हूं।

जनाब उदे सिंह शायक :—

'जिगर साहिब' का कलाम बेलौस महब्बत से मालामाल है। खयालात को ख़ुश-असलूबी से ब्यान करना उन्हीं का हिस्सा है। उनका हर शे'र सेहर-ओ-एजाज़ है। ज़ौक़े-स.लीम बे-इख़्तियार वज्द करता है। उनकी शायरी साहिरी है।

जनाब साहिर हुशयारपुरी :—

दाग़ खानदान की शायरी का सेहतमंद और तरक़्क़ी याफ़ता रंग 'जिगर साहिब' के कलाम का जौहर है। अन्दाज़-ए-बयां में सादगी-ओ-सलासत, बन्दिश-ए-अलफ़ाज़ में नफ़ास्तो-लताफ़त और लवाज़मे-शायरी के इस्तेमाल में फ़न्नी महारत उनके अक्सर शे'रों मे पाई जाती है।

डा० बशीर बदर :—

जनाब 'जिगर' जालन्धरी ने अपने फ़ितरी शायराना जौहर में यक़ीनन बड़ा रियाज़ किया होगा तब जाके वो ज़बान-ओ-बयां की बुलंदियों को छू सके हैं।

जनाब हुमा हरनालवी :—

'जिगर' साहिब मशक़-ए-सुख़न के साथ साथ अदबी कुतब का मुतालिया बड़ी बाक़ाइदगी से करते हैं। ज़बानो-फ़न की तहक़ीक़ का शौक़ भी जनूं की हद तक है। उनकी तबीयत जुमला इस्नाफ़े-सुख़न में कामयाब है। वो निहायत मुश्किल बहरों में भी आसानी से शे'र कह सकते हैं।

जनाब राम लाल वाइस चेयरमैन उत्तर प्रदेश उर्दू ऐकादमी लखनऊ :—

'जिगर जालन्धरी' ने अपनी ज़ात के इज़हार के लिए ऐसे मुआमलात और मौज़आत चुन लिए हैं जो शे'र की सूरत में ढल कर हमारे रगो-पै में एक नया अहसास बन कर घुल मिल जाते हैं। इसलिए मैं ख़ुद को उनके ज़ाती तजुर्बात में भी शरीक महसूस करने पर मजबूर हो जाता हूं।

जनाब आज़ाद गुलाटी :—

'जिगर' जालन्धरी की शायरी उनकी शख़सीयत का ख़लूस-नामा है। वही शायस्तगी, वही ठहराव, वही नज़्मो-ज़ब्त और वही ख़ुद्दारी-ओ-सरशारी जो उनकी शख़सीयत का ख़ासा है उनकी शायरी की शनाख़त भी बन गई है।

जनाब प्रेम कुमार नज़र :—

आज 'जिगर' पंजाब के उन गिने चुने शायरों में शुमार होते हैं जिनके हाथ में उर्दू ग़ज़ल का मुस्तक़बिल महफ़ूज़ समझा जाने लगा है। बतौर इन्सान 'जिगर जालन्धरी' अपनी शायरी से कहीं आगे हैं।

पत्र-पत्रिकाओं के विचार

दैनिक 'हिंद समाचार' जालन्धर :—

जिगर साहिब उर्दू के उन चंद गिने चुने शायरों में से हैं जिन्होंने उर्दू शायरी में पंजाब का नाम रोशन किया है। आप कमसिन हैं मगर खुश-गो सुखन-तराज हैं। ज़बान की शुस्तगी, बन्दिशों की पुख़तगी और जज़बात की पाकीज़गी ने उनकी शायरी को बहुत ऊंचा बना दिया है।

दैनिक 'मिलाप' नई दिल्ली :—

जनाब जिगर जालन्धरी पंजाब के जवां-साल साहिबे-तरज़ और मक़बूल शायरों की सफ़ में नुमायां और मुमताज़ हैं। उन्होंने अमीक़ो-वसीय मुतालिया के साथ बरसों फ़न्ने-शे'र का रियाज़ किया है जिससे उनके कलाम में हुस्नो-दिलकशी, जज़बो-असर, ताज़गी-ओ-शगुफ़तगी के साथ साथ पुख़तगी भी पैदा हुई है।

दैनिक 'प्रताप' जालन्धर :—

'जिगर जालन्धरी' तख़लीके-शे'र में कई मंज़िलें मार चुके हैं। उनका शुमार बड़े मश्शाक़ और पुख़ता-गो शायरों में होता है। आज अदबी दुनिया में जिगर जालन्धरी का ख़ास मुक़ाम और नाम है।

मासिक 'आजकल' नई दिल्ली :—

'जिगर जालन्धरी' पंजाब में ही नहीं मुल्क के दूसरे अदबी हलक़ों में भी जाने पहचाने जाते हैं। जिगर जालन्धरी की ग़ज़ल सहल-मुमतने का हुनर है। ग़ज़ल आसान, मिसरे तराशे और सजे सजाये, रदीफ़-ओ क़ाफ़िया में हम-आहंगी और बाहम पैवस्तगी जिगर के रंग को क़बूले-आम का दर्जा देती है।

पंजाब राजभवन की एक अदबी मीटिंग में लेखक भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी ज़ैल सिंह जी से मुलाक़ात करते हुए।

आल इंडिया मीर अकादमी लखनऊ के सम्मान समारोह में बिहार के भूत पूर्व मुख्य मंत्री डा० जगननाथ मिश्रा लेखक को इमतियाज़े-मीर एवार्ड पेश करते हुए। बीच में अकादमी के सैक्रेटरी जनाब मुज़फ़्फर हुसैन लारी और जनाब मलिक ज़ादा मंज़ूर खड़े हैं।

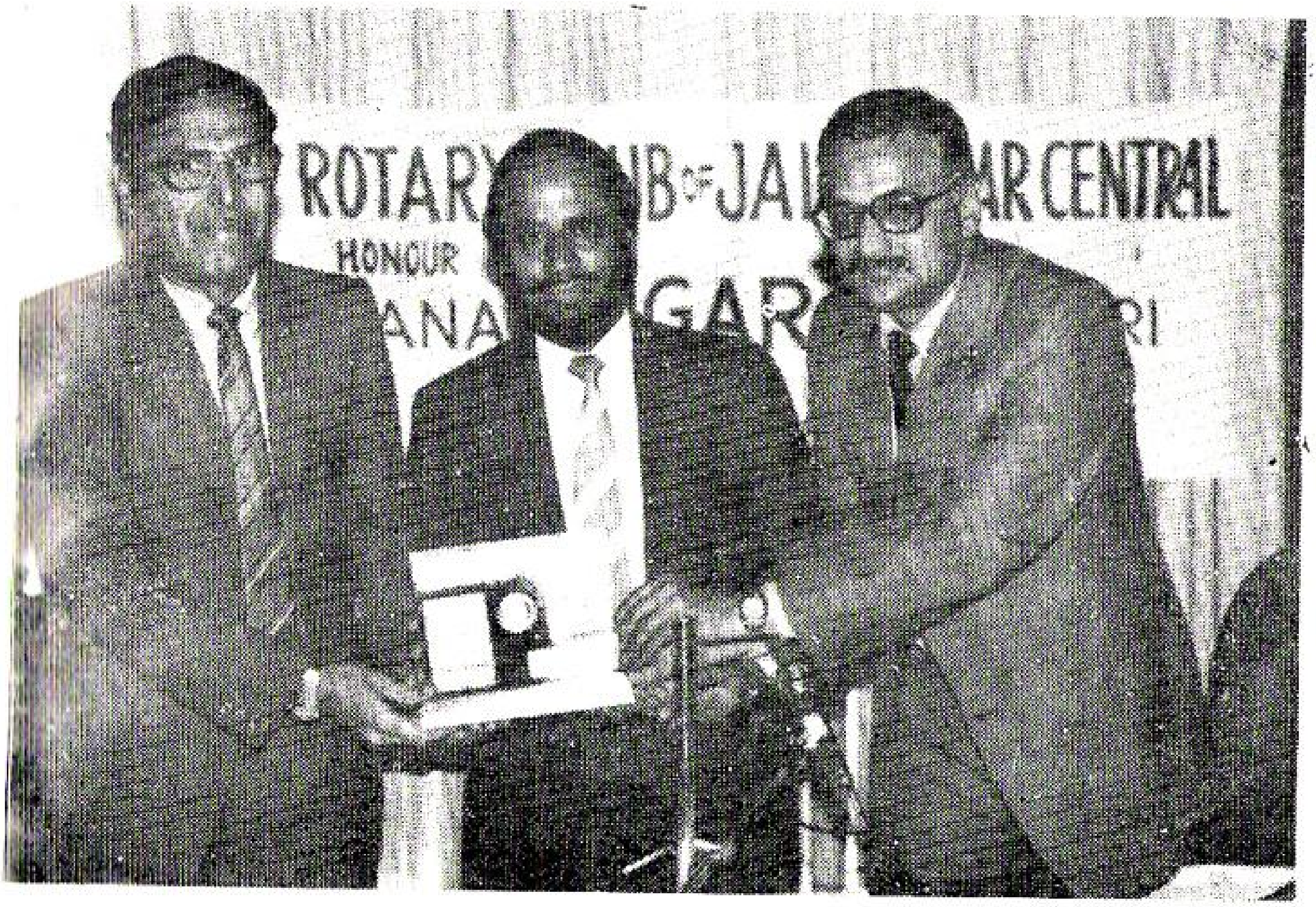

भूतपूर्व रोटरी गवर्नर श्री एस. बी. हंस और रोटरी कल्ब जालन्धर सैंटरल के प्रधान श्री नरेन्द्र सूद कल्ब की ओर से लेखक को सम्मानित करते हुए ।

...न-ए-जिगर के रिलीज़ पर पटियाला में हुए आल इंडिया मुशायरा में श्री अमर सिंह सिंगला ...टियाला शहरियों की ओर से लेखक को सम्मान देते हुए । तसवीर में सर्वश्री बाल कृष्ण ...मगला और आर. एल. बेरी भी नज़र आ रहे हैं ।

अपने गुरु पद्म श्री क़िबला जोश मलस्यानी और जनाब साहिर स्यालकोटी के साथ—
अब जिनके देखने को आंखें तरसती हैं।

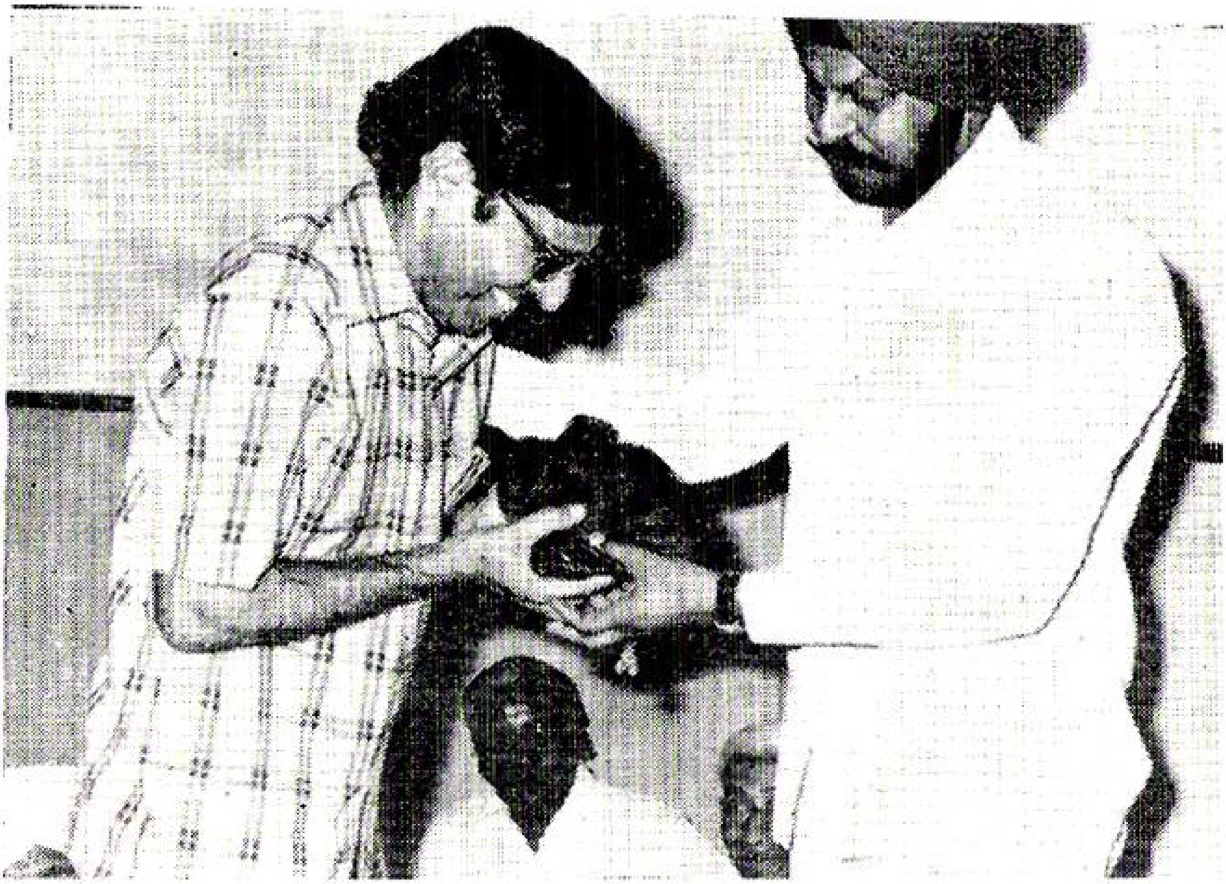

लख़्त-ए-जिगर के रिलीज़ पर पटियाला में हुए आल इंडिया मुशायरा में जनाब
अमरीक सिंह पूनी कमिशनर पटियाला डवीज़न लेखक को सम्मान देते हुए।

एक अदबी महफ़िल के अवसर पर :
बायें से दायें) श्री जी. एस. भुल्लर, डी. आई. जी. विजीलैंस, लेखक, डा. एच. एस. दयोल प्रबन्धकी मैंबर पंजाब राज बिजली बोर्ड, श्री आर. पी. जोशी डी. आई. जी. पंजाब ।

लेखक घर में अदबी काम करते हुए । आस पास सरकारी, अदबी और समाजी संस्थाओं से मिले हुए सम्मान पड़े हैं ।

लेखक का जीवन दर्पण

नाम : धर्मपाल मरवाहा

तख़ल्लुस : जिगर जालन्धरी

जन्म तिथि : 18—1—1935

जन्म स्थान : सारंगदेव, जिला अमृतसर (पंजाब)

शिक्षा : बी. ए; एल एल. बी.
अदीब फ़ाज़िल

सम्मान :

(i)	यू. पी. उर्दू अकादमी एवार्ड	1980
(ii)	पंजाब सरकार एवार्ड	1981
(iii)	इमतियाज़-ए-मीर एवार्ड	1985
(iv)	यू. पी. उर्दू अकादमी एवार्ड	1985
(v)	साहिर लुधियानवी एवार्ड	1986

इनके अतिरिक्त पंजाबी यूनीवर्सिटी पटियाला, रोटरी क्लब पटियाला मिड टाऊन, रोटरी क्लब जालन्धर, रोटरी क्लब राजपुरा, लाईन्ज क्लब जालन्धर, जालन्धर जे. सीज़ और हीरो साईकल प्राईवेट लिमिटड लुधियाना की ओर से भी सम्मानित किए जा चुके हैं।

रचनायें :

(i)	सोज़-ए-जिगर	1972
(ii)	लख्त-ए-जिगर	1979
(iii)	ख़ून-ए-जिगर	1984
(iv)	अन्दाज़-ए-जिगर	(नई पुस्तक)

विविध : पिछले 30 सालों से अपनी रचनाओं के द्वारा अदब और क़ौम की खिदमत कर रहे हैं। देश के सरकारी और ग़ैर-सरकारी रसालों और अखबारों में आप का कलाम छपता रहता है। दूरदर्शन, रेडियो और दूसरे सरकारी व ग़ैर सरकारी मुशायरों में शामिल होते रहते हैं। लखनऊ में 1973 और 1981 की आल इंडिया ग़ैर मुस्लिम उर्दू लेखक कानफ्रेंस में हिस्सा ले चुके हैं। 1981 की कानफ्रेंस के ज्वाइंट सैक्रेटरी रह चुके हैं।

कुछ अपनी तरफ़ से

मुद्दत से मेहरबान अदब दोस्तों और अजीज़ों का तक़ाज़ा चला आ रहा था कि अपने कलाम का एक मजमूआ देव नागरी लिपि में पेश करूं ताकि उर्दू ज़बान से नावाक़िफ़ लोग भी कलाम पढ़ सकें। मैंने वादा किया था कि अगर ज़िन्दगी ने साथ दिया तो तीसरा मजमुआ 'ख़ून-ए-जिगर' छपने के बाद उनकी ख्वाहिश को ज़रूर पूरा करूंगा। ख़ुदा-ए-करीम के करम और दोस्तों की दुआ से ख़ून-ए-जिगर मंज़रे आम पर आ गया है और किये हुये वादे को पूरा करते हुये देवनागरी लिपि में यह मजमुआ 'अन्दाज़-ए-जिगर' हाज़िरे खिदमत है। इसको पसंद या नापसंद करना पाठको के हाथ में है।

मेरी हमेशा यही कोशिश रही है कि शैरों में सलीस ज़बान का इस्तेमाल किया जाये और इसमें काफ़ी हद तक कामयाब भी रहा हूं। कहीं-कहीं मजबूरी से मुश्किल लफ्ज़ों का इस्तेमाल करना पड़ा जिनके अर्थ पाठकों की सहूलियत के लिए नीचे दे दिये गये हैं।

मैं सर्व श्री ए. एल. भरारा, प्रेम भूषण गोयल, एस. वी. हंस, ओ. पी. मुंजाल, बालकृष्ण सिंगला, जे. राय मंगला, जगतार सिंह, एम. एस. संधू, एस. एल. खन्ना, एस. के. गिरधर, जी. एस. कक्कड़, अजीत सिंह कक्कड़, हरमहिन्दर सिंह, ओ. पी. आनन्द, आर. एल. बेरी और नारायण दत्त का शुक्र गुज़ार हूं जिनकी प्रेरणा और सहयोग से यह मजमुआ मंज़रे-आम पर लाया जा रहा है।

—जिगर जालन्धरी

❋

ख़ुदा-ए-करीम से

मेरे लब पर नाम तेरा,
है ये ख़ास इनाम तेरा।
वो ज़र्रा ख़ुरशीद[1] बना,
जिसपे हुआ इकराम[2] तेरा।
कोई तेरा आग़ाज़ नहीं,
कोई नहीं अन्जाम तेरा।
दिल का मकूं है याद तेरी,
राहते-जाँ है नाम तेरा।
तेरे हवाले ख़ुद को किया,
आगे अब है काम तेरा।
इस रिश्ते पर नाज़ां हूँ,
कहते हैं लोग ग़ुलाम तेरा।
दिल में है तस्वीर तेरी,
होटों पर है नाम तेरा।
तुझको पा लूं देकर जान,
इतना सस्ता दाम तेरा?
जब दुनियां से जाए 'जिगर',
लब पर हो बस नाम तेरा।

---

1. सूर्य 2. बकशीश

ग़म हमारे ही लिए हों यह ज़रूरी तो नहीं,
हमने आंसू ही पिए हों यह ज़रूरी तो नहीं।
तुमको भी कुछ तो जुदाई ने सताया होगा,
हमीं मर मर के जिए हों यह ज़रूरी तो नहीं।
मेरी फ़ितरत[1] भी तो हो सकती है आज़ार-तलब[2],
तुम्हीं ने रंज दिए हों यह ज़रूरी तो नहीं।
चाक दामन जो किए फिरते हैं इन लोगों ने,
चाक सीने भी किए हों यह ज़रूरी तो नहीं।
मुदआ जीने का कुछ और भी हो सकता है,
तेरे वादे पे जिए हों यह ज़रूरी तो नहीं।
सी लिए चाके-गिरेबां तेरा दिल रखने को,
चाक दिल के भी सिए हों यह ज़रूरी तो नहीं।
हम उन्हीं के लिए हों यह तो ज़रूरी है, मगर,
वो हमारे ही लिए हों यह ज़रूरी तो नहीं।
ख़ूने-दिल से भी तो हो सकतीं हैं सुर्ख़ आंखे 'जिगर'
हमने साग़र हो पिए हों यह ज़रूरी तो नहीं।

1. स्वभाव 2. मुसीबत बुलाना।

हर एक ग़म को समझकर तेरी रज़ा मैंने,
हज़ार शुक्र किया और ले लिया मैंने।
ग़रीब दिल का न सोचा यह क्या किया मैंने ?
किसी के चेहरे से पर्दा उठा दिया मैंने।
तुम्हारे हुस्न की तारीफ़ फिर भी न हो सकी,
तमाम हुस्ने-बयां सर्फ़ कर दिया मैंने।
जो बात दिल में थी वो बात दिल में रह न सकी,
तुम्हारे कहने पे गो लब को सो लिया मैंने।
तुम्हारे जलवे को देखा जो बंद आंखों से,
तो बंद कर दिया आंखों से देखना मैंने।
किसी ने प्यार से देखा तो यूं लगा मुझको,
तमाम दौलते-दुनियां को पा लिया मैंने।
तेरे करम की थी तौहीन[1] ऐ खुदा-ऐ-करीम[2],
न हाथ उठाये न मांगी कभी दुआ मैंने।
हर इक सज़ा को समझकर लिखा मुक़द्दर का,
'जिगर' कहा न किसी को बुरा भला मैंने।

1. अपमान 2. दयालु।

वफ़ा के बराबर जफ़ा चाहता हूँ,
तेरा हौसला देखना चाहता हूँ।
हर इक दिल में हो इन्तहा की महब्बत,
मैं उस दौर की इब्तदा चाहता हूँ।
पलक की झपक भी गवारा नहीं है,
बराबर तुझे देखना चाहता हूँ।
हर इक सांस ज़ंजीर लगने लगी है,
मैं यह सिलसिला तोड़ना चाहता हूँ।
ज़माने के ग़म याद आने लगे हैं,
तेरा ग़म तुझे सौंपना चाहता हूँ।
कोई बेमुरव्वत[1] गले मिल रहा है,
तुझे जज़्बे-दिल[2] ! पूजना चाहता हूँ।
'जिगर' फूल शोले उगलने लगे हैं,
गुलिसतां को अब छोड़ना चाहता हूँ।

1. बेवफ़ा 2. दिल की कशिश।

दर्दे-दिल की दवा न हो जाये,
ज़िन्दगी बे-मज़ा न हो जाये ।
लुत्फ़ देती है क्या उमीदे-वफ़ा,
बेवफ़ा बावफ़ा न हो जाये ।
कैसे बेताब उनको देखूंगा,
आह या रब ! रसा[1] न हो जाये ।
दिल में हसरत बसा तो ली है, मगर,
यह कड़ी सिलसिला न हो जाये ।
अपनी दुनियां इसी से रोशन है,
गुल चिराग़े-वफ़ा न हो जाये ।
दिल है मग़रूर तरके-उल्फ़त[2] पर,
आपका सामना न हो जाये ।
हम सितम को करम समझते हैं,
उन पे यह राज़वा[3] न हो जाये ।
इक ज़माना है उसका दीवाना,
कहीं वो बुत ख़ुदा न हो जाये ।
तुम अगर छू लो अपने होंटों से,
शे'र मेरा तराना हो जाये ।
दिल लुटा कर 'जिगर' हमारी तरह,
कोई बे आसरा न हो जाये ।

1. पहुंच 2. प्यार को छोड़ना 3. भेद खुलना ।

रोकें लाख ज़माने वाले,
आ जाते हैं आने वाले ।
जशन मनाते हैं मुर्दों का,
ज़िन्दों को दफ़नाने वाले ।
हम में ताबे-दीद[1] नहीं है,
ओ हमसे छुप जाने वाले ।
हम तब जानें दिल की तड़प को,
ख़ुद तड़पें तड़पाने वाले ।
रोते और रुलाते देखे,
हंसने और हसाने वाले ।
ये भी प्यासा वो भी प्यासा,
होश कर ऐ मयख़ाने वाले ।
दूर ही मंज़िल से रहते हैं,
बैठे ही थक जाने वाले ।
तुम मग़रूर हो क्यों जलवों पर ?
फूल हैं यह मुरझाने वाले ।
शे'र 'जिगर' के सब होते है,
महफ़िल को गरमाने वाले ।

1. देखने की ताक़त ।

हो न कुछ बात मगर शोर मचाये रखना,
इस तरह औरों को हमदरद बनाये रखना।
तुम अगर चाहते हो सब तुम्हें हँस हँस के मिलें,
अपना ग़म अपने ही सीने में छुपाये रखना।
दूर रखना न कभी जलवों को मेरे दिल से,
इस चमन को इन्ही फूलों से सजाये रखना।
इससे पुरनूर[1] हुआ मेरी तमन्ना का दोया,
रूख़े-रोशन[2] से यूहीं पर्दा उठाये रखना।
यह हमारा ही कलेजा है कि तेरे ग़म को,
दिल की मानिंद कलेजे से लगाये रखना।
यह अदा उनकी मसीहा भी है क़ातिल भी है,
सामने आ के निगाहों को झुकाये रखना।
तुम अगर चाहते हो कोई तमन्ना न रहे,
हाथ हर एक तमन्ना से उठाये रखना।
दरे-महबूब[3] पे हर वक़्त पड़े रहना 'जिगर',
यानि उस दर को दरे-काबा[4] बनाये रखना।

---

1. रोशन 2. चमकीला चेहरा 3. प्रेमी की चौखट 4. काबे की चौखट।

जब पड़ा अक्से-यार[1] फूलों पर,
आ गया फिर निखार फूलों पर।
तेरे चेहरे से मिलते जुलते हैं,
क्यों न फिर आये प्यार फूलों पर ?
हम नहीं क़ाइल[2] उन बहारों के,
जिनका हो इनहसार[3] फूलों पर।
प्यार करता है कोई कांटों से,
और कोई निसार फूलों पर।
कट गये ज़िन्दगी के आठ पहर,
चार कांटों पे, चार फूलों पर।
उनके रुख़सारे-सुर्ख़[4] पर आँसु,
पड़ रही है फुहार फूलों पर।
आंधीयां चल रही हैं गुलशन में,
जम रहा हैं ग़ुबार फूलों पर।
शामे-फ़ुरक़त[5] में दाग़ रोशन हैं,
है ख़ज़ां में बहार फूलों पर।
ऐ 'जिगर' हुस्ने-यार हावी है,
गुलसितां के हज़ार फूलों पर।

---

1. दोस्त की परछाई 2. मानने वाले 3. निर्भर 4. सुर्ख़ गाल
5. जुदाई की शाम।

है राहे-वफ़ा पेशे-नज़र देखिये क्या हो ?
मुशकिल है बहुत इसका सफ़र देखिये क्या हो ?
उम्मीदे-सहर[1] में शबे-ग़म[2] काट रहे हैं,
हाल अपना मगर वक़्ते-सहर देखिये क्या हो ?
दिल में तेरे दर तक है पहुंचने की तमन्ना,
कम उमर है लम्बा है सफ़र देखिये क्या हो ?
तूफ़ानों के हमले हैं मेरे घर पे मुसलसल,
दीवारें बनी जाती हैं दर देखिये क्या हो ?
दिल इन दिनों दुख दर्द मुसीबत की है ज़द में,
इक कश्ती है कितने हैं भंवर देखिये क्या हो ?
उस ग़ैरते-ख़ुरशीद[3] के दीदार की ख़ातिर,
टकरायी है जल्वों से नज़र देखिये क्या हो ?
मरने की तमन्ना में जिए जाते हैं जो लोग,
हशर उनका पसे-मर्ग[4] 'जिगर' ! देखिये क्या हो ?

---

1. सुबह की उम्मीद 2. ग़म की रात 3. सूर्य से भी ख़ूबसूरत
4. मरने के बाद ।

जब निगाहें लड़ीं निगाहों से,
आंधियां उट्ठीं दिल की राहों से।
जुर्म साबित न हो तो जुर्म नहीं,
क़तल करते रहो निगाहों से।
हमने तूफ़ान पाल रक्खे हैं
अपने अश्कों से अपनी आहों से।
अपने जलवों को देखने के लिये,
ख़ुद को देखो मेरी निगाहों से।
गर्दे-रह[1] का भी एहतराम[2] करो,
इसको निस्बत है बादशाहों से।
तेरी रहमत को रखके मद्दे-नज़र,
दिल को बहला लिया गुनाहों से।
वही दिल के क़रीब रहते हैं,
दूर रहते हैं जो निगाहों से।
जब से धोके दिये हैं दिल ने मुझे,
बच के रहता हूं ख़ैर-ख़वाहों[3] से।
ज़र्रा ज़र्रा महक उठा है 'जिगर'
कौन गुज़रा है दिल की राहों से।

---

1. रास्ते की धूल 2. इज़्ज़त 3. शुभ चिन्तक।

इधर दिल ग़मों से बहलने लगा है,
उधर आसमां हाथ मलने लगा है।
ग़रज़ पड़ गई है मुझे दोस्तों से,
भरम दोस्ती का निकलने लगा है।
तुम्हारी बुराई हो मेरी ज़बां से ?
ज़माना कोई चाल चलने लगा है।
वो चेहरे से परदे को सरका रहे हैं,
गुमां[1] है कि सूरज निकलने लगा है।
हसद दोस्त से दोस्त करने लगे हैं,
ये सांप आस्तीनों में पलने लगा है।
कोई गुल खिलाने लगी है महब्बत,
लहू चश्मे-तर[2] से निकलने लगा है।
ख़ुदा के लिये आप रुक जायें दम भर,
बस अब दम किसी का निकलने लगा है।
उधर डगमगाने लगा है जमाना,
इधर कोई गिर कर संभलने लगा है।
'जिगर' ! पालकी सज रही है किसी की,
किसी का जनाज़ा निकलने लगा है।

1. ख्याल 2. रोती आंख।

दिल से अब उनके वादों को दुहरा रहा हूं मैं,
टूटे हुये खिलौनों से बहला रहा हूं मैं।
जब से हुआ है इल्म मुझे अपनी ज़ात का,
सजदे पे सजदा ख़ुद को किये जा रहा हूं मैं।
इससे ज़यादा क्या हो तेरे ग़म का एहतराम ?
सारे जहां की खुशियों को ठुकरा रहा हूं मैं।
जीने की आरज़ू में मरे जा रहे हैं लोग,
मरने की आरज़ू में जिए जा मह़ा हूं मैं।
मुश्किल हुआ है अब उन्हें बेताब देखना,
फ़रयादे-कामयाब पे पछता रहा हूं मैं।
मय का नहीं यह तेरी नज़र का कमाल है,
बल खा रहा हूं बज़म में लहरा रहा हूं मैं।
गरमे-सफ़र हूं शामो-सहर य ख़बर तो है,
इसकी ख़बर नहीं कि कहां जा रहा हूं मैं ?
ऐ मेहरबां ! तुम्हारी निगाहों का फ़ैज़ है,
ज़र्रे से आफ़ताब बना जा रहा हूं मैं।
उस जाने-ज़िन्दगी की जुदाई में ऐ 'जिगर'
हैरां हूं इस तरह भी जिए जा रहा हूं मैं।

जब वो ना-मेहरबां नहीं होता,
आसमां आसमां नहीं होता ।
हम ज़माने से क्या उमीद करें ?
तू ही जब मेहरबां नहीं होता ।
कहां आराम ढूंडने जायें ?
किस जगह आसमां नहीं होता ?
मेरी नजरों से दूर रह कर भी,
वो नज़र से निहां नहीं होता ।
उसको नज़रें बयान करती हैं,
जो ज़बां से बयां नहीं होता ।
उजर अब क्यों है मुझसे मिलने में ?
मैं तेरे दरम्यां नहीं होता ।
दैरो-काबा[1] में ढूँडने वालो !
उसका जलवा कहां नहीं होता ?
दर्द का क्या सबूत पेश करूं ?
इसका कोई निशां नहीं होता ।
लाख आराम हों क़फ़स में, मगर,
फिर भी वो आशियां नहीं होता ।
इम्तहाने-वफ़ा से बढ़ के 'जिगर'
कोई भी इम्तहां नहीं होता ।

1. मन्दिर-मस्जिद ।

ऐ दोस्त ! तेरे हिजर में तकलीफ़ बड़ी है,
हर एक घड़ी मुझको क़यामत की घड़ी है।
जो कहता था मर कर मुझे आराम मिलेगा,
उस शख़्स की चौराहे में अब लाश पड़ी है।
इक रात की है बात कि वो बिछड़े थे हम से,
उस दिन से वहीं की वहीं वो रात खड़ी है।
दिल और सरे-आम तेरे इश्क़ का दावा,
मुँह छोटा है हज़रत का, मगर बात बड़ी है।
क्या ख़ूब नज़ारा है तेरे जलवों का दिल में,
आईने में सौ रंग की तसवीर जड़ी है।
यह इश्क़ कहीं आग बना है कहीं पानी,
दिल जलता है और आँखों में अश्कों की झड़ी है।
दामन तेरी उल्फ़त का कहीं छूट न जाये,
आज़ारो-मुसीबत[1] की हवा तेज़ बड़ी है।
ख़ुद्दारी की दौलत भी तो कुछ कम नहीं ऐ दिल !
बेशक तुझे इस काम में तकलीफ़ बड़ी है।
उस पेड़ की सूरत है 'जिगर' अपनी तमन्ना,
फल आता नहीं जिस पे मगर छांव बड़ी है।

---

1. दुख और मुसीबत।

तुम्हारे ग़म को है ये मेहरबानी,
ख़ुशी से कट रही है ज़िन्दगानी।
अगर बचना है तुझ को हादिसों से,
न सौंप औरों को अपनी पासबानी।
कभी ग़म शादमानी[1] में मिला है,
कभी ग़म में मिली है शादमानी।
बिछड़ कर फिर न हम से मिल सकेगी,
गले जी भर के मिल ले ऐ जवानी।
सितम को मेहरबानी कह रहा हूं,
महब्बत ही की है ये मेहरबानी।
महब्बत छोड़ कर कैसे जिएंगे?
महब्बत है हमारी ज़िन्दगानी।
लगा दी आग तन मन में किसी ने,
हमारे आंसुओं को कह के पानी।
'जिगर'! मौजों की सूरत जी रहे हैं,
समुंदर है हमारी ज़िन्दगानी।

1. खुशी।

प्यार होने न पाये जुदा देखना !
ज़िन्दगी बन न जाये सज़ा देखना।
इस तरह आप मुझको न देखा करें,
मार डालेगा यूँ आपका देखना।
प्यार से बज़्मे-हस्ती[1] में है रोशनी,
बुझ न जाये कहीं ये दीया देखना।
पड़ गई हैं दिलों में दराड़ें कई,
कैसा आया है ये ज़लज़ला देखना।
उमर भर का सफ़र तय किया रात में,
शमा थी किस-क़दर तेज़पा[2] देखना।
आदमी आदमी से परेशान है,
चल रही है ये कैसी हवा देखना।
शमा परवाने मर मिट के इक हो गये,
देखना ! इश्क़ की इन्तहा देखना।
जिस तरीक़े से सुलझा रहे हो इसे,
और उलझेगा ये मसअला, देखना।
याद अच्छी नहीं इन बुतों की 'जिगर'
भूल जाये न तुम को ख़ुदा देखना।

---

1. जीवन महफ़िल 2. तेज़ चलने वाली।

❋

जब कोई ग़म ही न हो अशक़ बहाऊं कैसे ?
ख़ुद को दुनिया की अदाकारी सिखाऊं कैसे ?
तेरी हर एक झलक और बढ़ाती है तलब,
ऐसे में प्यास निगाहों की बुझाऊं कैसे ?
ख़ुद-बख़ुद आंखों के पैमाने छलक पड़ते हैं,
शिद्दते-ग़म[1] को छुपाऊं तो छुपाऊं कैसे ?
चांद तारों से ज़रा भी तुझे तसकीन नहीं,
ज़िन्दगी ! अब मैं तेरी मांग सजाऊं कैसे ?
जिसको आने की तसव्वुर में भी फ़ुर्सत न मिले,
हाले-दिल उसको सुनाऊं तो सुनाऊं कैसे ?
बच के दुनियां की निगाहों से ख़ता कर तो लूं,
अपनी नज़रों से मगर ख़ुद को गिराऊं कैसे ?
आग हो तो इसे पानी से बुझा भी लूं 'जिगर'
ये लगी दिल की है मैं इसको बुझाऊं कैसे ?

. ग़म की अधिकता

किस का लब पर मेरे फ़साना है ?
हमा-तन गोश इक ज़माना है ।
ज़िन्दगी एक ख्वाब है, लेकिन,
इस हक़ीक़त को किसने जाना है ?
किस तरह ग़म को छोड़ दूं यक-लखत,
इस से रिश्ता बहुत पुराना है ।
और थोड़ी सी कीजिये तकलीफ़,
दो क़दम पर ग़रीबख़ाना है ।
आप के लौटने की देर है बस,
उमरे-रफ़्ता[1] को लौट आना है ।
ज़िन्दगी ! तुझसे क्या मैं प्यार करूं ?
चाल तेरी मुसाफ़िराना है ।
रू-ब-रू[2] दिल के है वो शोख नज़र,
बर्क़ की ज़द में आशियाना है ।
है तमन्ना किसी से मिलने की,
मौत तो ऐ 'जिगर' ! बहाना है ।

---

1. बीती उम्र 2. सामने

बन कर नीला पीला पत्थर,
ख़ूब दिखाये लीला पत्थर।
आई जवानी क्या उस बुत पर,
शोख़ हुआ शर्मीला पत्थर।
अन्दर उसके आग लगी थी,
बाहर से था गीला पत्थर।
बेशक फांसी पर लटका दो,
कब होता है ढीला पत्थर?
संग-दिली[1] में रंग न बदले,
काला, पीला, नीला, पत्थर।
हीरा, पन्ना कहलाता है,
चमकीला, रंगीला पत्थर
वो कोई दीवाना होगा,
जिस इन्सान ने छीला पत्थर।
जीवन ज़हर की ख़ातिर कोई,
चाट गया ज़हरीला पत्थर।
चोट लगाना काम है उसका,
अर्श[2] 'जिगर'! है नीला पत्थर।

---

1. पत्थर दिली 2. आसमान

किस के दर की मिली ये धूल मुझे ?
कीमिया[1] भी लगे फ़ज़ूल मुझे ।
हक़ तो साबित हुआ गुलिस्तां पर,
ख़ार बेशक हुये हसूल मुझे ।
आप की मीठी बातों में आकर,
जहर करना पड़ा क़बूल मुझे।
जिन्दगानी के नाज़ उठाता हूं,
मौत करती नहीं क़बूल मुझे ।
क्या बताऊं कि इक ख़ुशी के लिये ?
कितना होना पड़ा मलूल मुझे।
भूल कर भी न मेरी याद आये,
भूलने वाले यूं न भूल मुझे ।
कोई हसरत न कोई अरमां है,
ज़िन्दगी लगती है फ़ज़ूल मुझे ।
बाग़-हस्ती[2] से सर्व की मानिंद,
'जिगर'! इक भी मिला न फूल मुझे।

---

1. अमूल्ल वस्तु 2. जीवन उपवन

इस का नहीं है ग़म कि फ़क़त ग़म दिया मुझे,
इसकी ख़ुशी है आप से कुछ तो मिला मुझे।
गो हर बला में इसने किया मुब्तला[1] मुझे,
फिर भी मिला न दिल सा कोई आशना मुझे।
इसकी अज़ीयतों[2] से करूं तरके-आशिक़ी[3],
हैरान हूं, जमाना समझता है क्या मुझे?
इक ख़ास मेहरबान की ये ख़ास देन है,
ग़म क्यों न हों अज़ीज़ ख़ुशी से सिवा मुझे?
दुनिया पुकारती है मुझे तेरे नाम से,
बख़शा है तेरे इश्क़ ने क्या मरतबा मुझे?
दुनिया की उलझनों से बचाने के वास्ते,
दीवाना अपने दिल को बनाना पड़ा मुझे।
उनकी निगाहे-मस्त से पीता हूं रात दिन,
दुनिया समझ रही है 'जिगर' पारसा मुझे।

1. गरिफ़तार 2. कष्ट 3. प्यार को छोड़ना।

जी चाहता है बन के तेरा आईना रहूं,
तेरी अदायें शामो-सहर देखता रहूं।
ऐ आसमान ! इस में तेरा क्या बिगाड़ है ?
मेरे बने रहें वो, मैं उनका बना रहूं।
ऐ दोस्त ! हो न इसमें अगर तुझको एतराज़,
मानिंदे-संग[1] मैं तेरे दर पर पड़ा रहूं।
ये शर्म, ये हिजाब, मुक़द्दर की बात है,
हो कर भी तेरे पास मैं, तुझसे जुदा रहूं।
कितना अजीब रोग है या रब ! ये आशिक़ी,
हर शख़्स चाहता है कि मैं मुब्तला रहूं।
उस चश्मे-मै-फ़रोश[2] की दावत है, ऐ 'जिगर' !
है अब ग़लत ये बात कि मैं पारसा रहूं।

1. पत्थर की तरह 2. मदभरी आँख।

या रब ! मेरे सिवा न किसी को सताये ग़म,
दुनिया से जब मैं जाऊं, मेरे साथ जाये ग़म।
आना जो चाहता है मेरे पास, आये ग़म,
मैं आज़माऊं ग़म को, मुझे आज़माये ग़म।
क्या फ़ायदा तड़पने का, ऐ मुब्तलाये-ग़म !
जब मौत के सिवा नहीं कोई दवाए-ग़म।
रोता हूं दूसरों की मुसर्रत के वास्ते,
ख़ुशियों को बांटता हूं मैं लेकर पराये ग़म।
पत्थर बना हुआ हूं मैं बेताबियों के बाद,
वो इब्तदाये-ग़म[1] थी, ये है इन्तहाये-ग़म।
अब आंसुयों को पोंछिये, दिल को संभालिये[2],
कहते थे बार बार "सुना माजरा-ए-ग़म"।
मिलती है ये तो चीज़ किसी ख़ुशनसीब को,
हर एक का नसीब कहा है कि खाये ग़म ?
खातिर तवाज़ो उसकी हो जब ख़ूने-दिल के साथ,
ख़ुश हो के क्यों न फिर मेरे पहलू में आये ग़म ?
क़िस्मत हमारी उसको 'जिगर' ! सौंप दी गई,
कुछ भी नहीं न हाथ में जिसके सिवाये-ग़म।

---

1. ग़म की शुरूआत 2. ग़म का अंत

इक बे-वफ़ा ने हमको रूलाया हज़ार बार,
ग्रांखों से हमने ख़ून बहाया हज़ार बार।
हम ग्राज तक न तुमको फ़रामोश[1] कर सके,
गो तुमने हमको दिल से भुलाया हज़ार बार।
फिर भी न ग्रपने सोज़े-जिगर में कमी हुई,
इहसान चश्मे-तर[2] का उठाया हज़ार बार।
महरूम जौर से भी हमें उसने कर दिया,
यूं भी हमारे दिल को सताया हज़ार बार।
ग्रपनी ही ग्रांख ताबे-नज़ारा[3] न ला सकी,
परदा तो उसने रुख़ से उठाया हज़ार बार।
हमको न दाग़े-दिल से 'जिगर' ! रोशनी मिली,
गो हमने ये चिराग़ जलाया हज़ार बार।

1. भूलना 2. रोती आंख 3. दृश्य की चमक।

दिल मेरा ले के मुझे आप दग़ा देते हैं,
कभी सोचा है कि क्या लेते हैं? क्या देते हैं?
जिनको वो मस्त निगाहों से पिला देते हैं,
ता-क़यामत[1] उन्हें सर-मस्त बना देते हैं।
शमा ही है वो जो रो लेती है चुपके, चुपके,
हम तो जब रोते हैं, महफ़िल को रूला देते हैं।
क़ाबिले-दीद[2] अगर है तो जनूं उनका है,
पुरज़े जो दामने-हस्ती के उड़ा देते है।
जान दे देगें तेरे इश्क़ में हम, झूट नहीं,
हम जो कहते हैं, वही कर के दिखा देते हैं।
इक तरफ़ वो हैं, जो करते हैं जफ़ा शामो-सहर,
इक तरफ़ हम हैं, कि इस पर भी दुआ देते हैं।
तनज़िया बात वो करते हैं हमेशा हम से,
शीरो-शक्कर[3] में 'जिगर'! ज़हर मिला देते हैं।

प्रलय तक 2. देखने के योग्य 3. मिठास।

बात जो हक़ की है हक़ वाले सुना देते हैं,
लोग बेशक उन्हें सूली पे चढ़ा देते हैं।
डाल कर अक्स वो आईने में भर देते हैं रंग,
वरक़े–सादा[1] को तस्वीर बना देते हैं।
सौ बहारों से भी फूल इतने न खिलने पायें,
जितने इक जुंबशे-लब[2] से वो खिला देते हैं।
ख़ूने-नाहक़[3] नहीं परवानों का देखा जाता,
हम चिराग़ों को सरे–शाम बुझा देते हैं।
शे'रों में हुस्नो-अदा रंगो-तबस्सुम[4] भर कर,
हम ग़ज़ल को तेरी तस्वीर बना देते हैं।
दिल सी शै हमने तो कर दी है निछावर उन पर,
देखिये इस के इव्ज़ वो हमें क्या देते हैं?
मुजरिमे-इश्क़ हूं मैं, सबसे बड़ा जुर्म है इश्क़,
जो सज़ा मुझको वो देते हैं, बजा देते हैं।
इम्तहां एहले–हवस[5] का है अबस[6], याद रहे,
जान देते हैं तो अरबाबे-वफ़ा देते हैं।
ऐसे लोगों से 'जिगर' क्या हो तवक़्क़ो[7] हम को,
क़त्ल करके भी जो एहसान जता देते हैं।

1. कोरा काग़ज़ 2. होठों की हरकत 3. बे-सबब कत्ल 4. मुस्कराह
5. अय्याश 6. व्यर्थ 7. आशा।

सुना तूने ? मुझे कहती है दुनिया तेरा दीवाना,
कहे तू भी तो हो जाये मुकम्मल मेरा अफ़साना।
सरे-महफ़िल निकाबे-रूऐ-ताबां[1] तुम न सरकाना,
समझ कर शमे-रोशन आ न जाये कोई परवाना।
सरूरे-इश्क़ मुझको है, ग़रूरे-हुस्न तुझको है,
इधर मैं भी हूं मस्ताना उधर तू भी है मस्ताना।
अनोखी बात ये देखी जहाने-इश्क़ में हमने,
जो दीवाना वो फ़रज़ाना[2], जो फ़रज़ाना वो दीवाना।
बफ़ूरे-रंजो-गम[3] में क्यों न निकलें आंख से आंसू ?
छलक जाता है, जब लबरेज़ हो जाता है पैमाना।
नुमाइश की हवस उसको, न शोहरत की तलब उसको,
भरी महफ़िल में खामोशी से जल जाता है परवाना।
हजूमे-यासो-हसरत[4] से यह सूरत है मेरे दिल की,
कि आबादी की आबादी है, वीराने का वीराना।
महब्बत करने वाले इक तुझी को सजदा करते हैं,
उन्हें परवा नहीं इसकी, यह काबा है कि बुतखाना।
मुझे डर कुफ्र की तारीकियों का ऐ 'जिगर' क्यों हो ?
मुनव्वर शमे-ईमां[5] से हुआ है मेरा काशाना[6]।

---

1. चमकीले चेहरे से पर्दा 2. अक़्लमंद 3. दुख दर्द की अधिकता
4. ना उम्मीदी और हसरत की अधिकता 5. यक़ीन के चिराग़ की रोशनी
6. घर।

उमरे-दो-रोज़ा[1] ने आराम से रहने न दिया,
मुझको जी भरके तेरा जौर भी सहने न दिया।
ख़ुद-नुमाई[2] की हवा ऐसी चली, जिसने कहीं,
एक भी परदा-नशीं परदे में रहने न दिया।
मौज-ज़न[3] दिल में समुंदर थे मगर उनके हुज़ूर[4],
ज़ब्ते-कमबख़्त ने इक अशक भी बहने न दिया।
हम तो कुछ भी नहीं हैं, तेरी तलब[5] ने शबो-रोज़,
चांद सूरज को भी आराम से रहने न दिया।
घर में, महफ़िल में, चमन-ज़ारों में, सहराओं में
बे-क़रारी ने कहीं चैन से रहने न दिया।
आग लग जाये 'जिगर'! ऐसी वफ़ादारी को,
जिसने क़ातिल को भी क़ातिल हमें कहने न दिया।

1. दो दिन की ज़िन्दगी 2. नुमाइश 3. लहरें मारते हुए 4. सामने 5. तलाश।

बन संवर कर वो जब निकलता है,
देख कर आफ़ताब जलता है ।
पहले बहते थे अश्क आँखों से,
ख़न ही ख़ून अब निकलता है।
मौत ही इक इलाजे-ग़म है, मगर,
इस पे भी किसका ज़ोर चलता है।
राहे-उल्फ़त की लग़ज़िशें[1] तौबा !
हर क़दम पर क़दम फिसलता है।
रूक ही जाती है गरदिशे-दौरां[2],
जाम जब मैकदे में चलता है।
हो चुका अब मरीज़े ग़म का इलाज,
चारागर बैठा हाथ मलता है ।
यूँ निकलता है मेरे दिल से लहू,
जैसे चश्मा कोई उबलता है ।
उसने रुख से निक़ाब उलट के कहा,
"चांद बदली से यूं निकलता है"।
हर ग़ज़ल में 'जिग़र' ! क़लम तेरा,
कैसे कैसे गौहर उगलता है ।

फिसलन 2. ज़माने का चक्कर ।

कोई बेहतर है न बदतर पत्थरों के शहर में,
सारे पत्थर हैं बराबर पत्थरों के शहर में।
संग-दिल लोगों में हम ने उमर सारी काट दी,
कोई इक दिन देखे रह कर पत्थरों के शहर में।
जब से तेरे दर पे आया संगे-असवद[1] बन गया,
वर्ना था बेकार पत्थर, पत्थरों के शहर में।
पत्थरों के शहर में कहते हो "पत्थर हैं फ़क़त,"
और क्या हों लालो–गौहर पत्थरों के शहर में ?
बे-हिसों की सोहबतों ने मुझको बेहिस[2] कर दिया,
बन गया पत्थर मैं रह कर पत्थरों के शहर में।
जीते जी तो मिल गईं हमको बुतों की सोहबतें,
दफ़न भी हों काश मर कर पत्थरों के शहर में।
अपने मन्दिर की मैं जिससे मूर्ति बनवा सकूं,
ढूंढता हूं ऐसा पत्थर, पत्थरों के शहर में।
तुमको उम्मीदे-वफ़ा, वो भी बुतों से, ऐ जिगर !
ढूंढते हो फूल जाकर पत्थरों के शहर में।

1. पूजने वाला पत्थर 2. महसूस न करने वाला।

किसी से रब्त नहीं है किसी से प्यार मुझे,
न जाने रहता है फिर किस का इंतज़ार मुझे।
हर एक सांस मेरी उमर को घटाती है,
नफ़स[1] का तार है गोया कफ़न का तार मुझे।
मेरी बहार को मौसम का इंतजार नहीं,
कोई जो हंस के मिला, मिल गई बहार मुझे।
न बेक़रार हो तू मेरी बेक़रारी पर।
तड़प-तड़प के ख़ुद आ जायेगा क़रार मुझे।
ये दिल का आईना अब तोड़ने के क़ाबिल है,
दिखाई देता नहीं इसमें रूये-यार[2] मुझे।
किसी के हुस्न की मैंने बहार देखी है,
चमन के फूल दिखाते हैं क्या बहार मुझे?
ये ख़ुद-फ़रेबी[3] है मेरी कि ख़ुद-फ़रामोशी[4],
न आने वाले का रहता है इंतज़ार मुझे।
मेरे वजूद से हरकत तो है जमाने में,
अगरचे मौज की सूरत नहीं क़रार मुझे।
'जिगर' के ख़ून से आंखों में सुर्ख़ डोरे हैं,
समझ रहा है ज़माना शराब-ख़्वार[5] मुझे।

. सांस 2. महबूब का चेहरा 3. ख़ुद को धोखा देना 4. ख़ुद को भूलना
. शराबी।

दाग़ रोशन है यूँ मेरे दिल में,
शमा जलती हो जैसे महफ़िल में।
एक दो की तो कोई बात न थी,
लाख अरमान हैं मेरे दिल में।
ख़ुद ब-ख़ुद झुक गई मेरी गर्दन,
देख कर तेग़ दस्ते-क़ातिल[1] में।
दिल मिलें जब उन्हें जलाने को,
क्यों जलायें वो शमा महफ़िल में ?
तेरी उल्फ़त में जान दे देंगे,
कर लिया हैं ये फ़ैसला दिल में।
किस क़दर लोग जमा रहते हैं,
तेरे कूचे में, तेरी महफ़िल में।
जल रहा हूं चिराग़ की मानिंद[2],
ऐ 'जिगर'! इस जहां की महफ़िल में।

1. कातिल का हाथ 2. तरह

जुल्म होते हैं हमीं पर बे-हिसाब,
दाद के क़ाबिल है उनका इंतख़ाब[1]।
डालते हो किस लिये रुख़ पर निक़ाब ?
छुप भी सकता है कहीं ये आफ़ताब ?
देखता हूं दो-पहर का आफ़ताब,
याद आता है तेरा हुस्नो-शबाब[2]।
ज़िन्दगी पर हम भरोसा क्या करें ?
ज़िन्दगी तो है सरासर एक ख़वाब।
इश्क़ क्या है ? क़तरा-ए-शबनम[3] फ़क़त[4],
हुस्न क्या है ? इक चमकता आफ़ताब।
शौक़े-क़ामिल[5] दिल में होना चाहिये,
ख़ुद-ब-ख़ुद उठ जायेंगे सारे हिजाब।
हम अगर सच भी कहें वो झूट है,
आप का तो झूट भी सच है, जनाब !
क्यों न हों मख़सूर इस से अहले-बज़म[6] ?
मेरा इक-इक शे'र है जामे-शराब।
दिल-कशी[7] हर शे'र में है, ऐ 'जिगर' !
ये ग़ज़ल तुमने कही है ला-जवाब।

. चुनाव 2. सुन्दरता और जवानी 3. ओस की बूंद 4 सिर्फ़
. पूरा शौक़ 6. महफ़िल वाले 7. दिल का आकर्षण।

कुछ इस क़दर इस दौर में है ख़वार[1] महब्बत,
बिकती हुई देखी सरे-बाज़ार महब्बत ।
दिल आप का रख देगी यक़ीनन ये बदल कर,
सरकार महब्बत है ये, सरकार महब्बत ।
दाग़ों से है भरपूर मेरे दिल का ख़ज़ाना,
नादार[2] को कर देती है ज़रदार[3] महब्बत ।
जिस को ये हंसाती है, रुलाती भी हैं उसको,
है फूल कभी और कभी ख़ार महब्बत ।
फूलों पे भी रोते हुये देखा है इसी को,
हंसती हुई देखी है सरे-दार[4] महब्बत ।
ऐ काश ! करूं तेरी तरह तुझ पे जफ़ायें,
तू मेरी तरह मुझसे करे प्यार महब्बत ।
हो जायेगा दुशवार 'जिगर' ! हिज्र[5] में जीना,
इतनी न बढ़ा उनसे मेरे यार ! महब्बत ।

---

1. ज़लील 2. ग़रीब 3. अमीर 4. सूली पर 6. जुदाई ।

दाद उल्फ़त की पा रहा हूं मैं,
उनको भी याद आ रहा हूं मैं ।
खुद से गो दूर जा रहा हूं मैं,
तेरे नज़दीक आ रहा हूं मैं ।
किस क़दर एहतराम[1] है ग़म का,
ग़म में भी मुस्करा रहा हूं मैं ।
खाक होना भी रायेगां[2] न गया,
सारे आलम पे छा रहा हूं मैं ।
मिल ही जायेगा यूं सुराग़ तेरा,
अपनी हस्ती मिटा रहा हूं मैं ।
क्यों न रश्के-चमन[3] हो कुंजे क़फस[4] ?
अश्के-ख़ूनीं बहा रहा हूं मैं ।
शबे-फ़ुरक़त[5] में रोशनी के लिये,
दाग़ दिल के जला रहा हूं मैं ।
दिल पे हसरत का दाग़ ले के 'जिगर' ।
बाग़े-हस्ती[6] से जा रहा हूं मैं ।

---

1. इज्ज़त 2. व्यर्थ 3. बाग़ से सुन्दर 4. पिंजरा 5. रात की दाई 6. जीवन उपवन

कमाले-ज़ब्त[1] था अपना, जो आह भी न हुई,
किसी के ज़ुल्मों-सितम में मगर कमी न हुई।
मिटी न तीरगी-ए-शब[2] जिगर के दाग़ों से,
जले चिराग़, मगर घर में रोशनी न हुई।
तमाम उमर इकट्ठे रहे, मगर फिर भी,
गुल और ख़ार की आपस में दोस्ती न हुई।
चिराग़, शम्स[3], क़मर, आईना, गुले-ख़ंदां[4],
किसी से उस रूख़े-रोशन को हमसरी न हुई।
हज़ार फ़ितने[5] उठाये फ़लक ने शामो-सहर,
सितमगरी में तुम्हारी बराबरी न हुई।
जफ़ाओ-जौर की आंधी बहुत चली, लेकिन,
चिराग़े-इश्क की लौ में ज़रा कमी न हुई।
हज़ार बार चमन में बहार आई, मगर,
शगुफ़ता[6] मेरे दिल की कली कभी न हुई।
ख़याल था कि गले मिल के हम करेंगे गिले,
वो जब मिले तो 'जिगर'! हम से बात भी न हुई।

---

1. सहन शीलता 2. रात का अंधेरा 3, सूरज 4. हंसता हुआ फ़ूल 5. फ़साद 6. खिली

ये मुसलसल बेक़रारी क्यों है पारे की तरह?
ज़िन्दगी तेरी तो है इक पल शरारे[1] की तरह।
तू अगर प्यासा है, दरिया से न ले पानी की बूंद,
अपनी ख़ुद्दारी[2] को क़ाइम रख किनारे की तरह।
आरज़ूओं की तरह दिल में छुपा बैठा है क्यों?
मेरी नज़रों के मुक़ाबिल आ नज़ारे की तरह।
जल्द टुकड़े टुकड़े हो कर ख़ाक में मिल जायेगा,
क्यों हवा में उड़ रहा है तू ग़ुबारे की तरह?
सौ समुन्दर भी उसे सैराब[3] कर सकते नहीं,
प्यास जो अपनी बढ़ाता है किनारे की तरह।
तू अगर बेताब है इकसीर[4] बनने के लिये,
अपनी हस्ती को मिटा दे कुश्ता पारे की तरह।
आसमां की गरदिशों का ख़ौफ़ तेरे दिल में क्यों?
तू जो मरकज़[5] पर ख़ड़ा है कुत्ब[6] तारे की तरह।
सामने मेरे तुम्हारे हुस्न का दरिया रहे,
और मैं देखा करूं तुमको किनारे की तरह।
है तसव्वुर में मेरे वो नूर का पुतला 'जिगर'!
शेर मेरा क्यों न रोशन हो सितारे की तरह।

---

1. चिंगारी 2, आत्म-सम्मान 3. प्यासा बुझाना 4. रसायन
5. केन्द्र बिन्दु 6. ध्रुव

उस ज़ुल्फ़ की तौसीफ़[1] बताई नहीं जाती,
इक लम्बी कहानी है, सुनाई नहीं जाती।
दिल है कि मरा जाता है दीदार की खातिर,
हम हैं कि उधर आंख उठाई नहीं जाती।
अश्कों से कभी सोज़े-जिगर कम नहीं होता,
ये आग तो पानी से बुझाई नहीं जाती।
दिल से तो तेरा दाग़े-महब्बत न छुपेगा,
आईने से तस्वीर छुपाई नहीं जाती।
या रब ! कहां ले जाऊं मैं हसरत-ज़दा[2] दिल को,
ये लाश तो अब मुझसे उठाई नहीं जाती।
आहों से कमी ग़म में न होगी, दिले-नादां!
फूंकों से कभी आग बुझाई नहीं जाती।
क्यों अश्के-नदामत[3] न बहायें 'जिगर' ! आंखें,
जो दिल में लगी है, वो बुझाई नहीं जाती।

---

1. तारीफ़ 2. हसरत का मारा 3. शर्मिन्दगी के आंसू

महफ़िल में जिधर वो हैं, उधर देख रहे हैं,
हम देखने वालों का जिगर देख रहे हैं।
ये नाला-ए-शब[1] ही का असर देख रहे हैं,
आज उनको जो हम वक़्ते-सहर देख रहे हैं।
देखे थे कभी ताजे-शही[2] जिनके सरों पर,
आज उनको भी हम ख़ाक बसर[3] देख रहे हैं।
ऐ हुस्न! नज़र-सोज़[4] है जलवा तेरा बेशक,
जो देखने वाले हैं, मगर देख रहे हैं।
मैंने जो कहा "देखें इधर भी" तो वो बोले,
"देखेंगे उधर, हम तो जिधर देख रहे हैं।"
ऐ दीदा-ए-ख़ूंबार[5]! तेरा लुत्फ़ो-करम[6] है,
दामन में जो हम लालो-गौहर देख रहे हैं।
देखा है तुझे देखने वालों ने कई बार,
हम अपनी मगर ताबे-नज़र, देख रहे हैं।
है कौन, जिसे तेरी शिकायत नहीं, ज़ालिम!
दुनिया में ये हम शामो-सहर देख रहे हैं।
जलते हुये देखा है 'जिगर'! खाना-ऐ-दिल को,
ये आतिशे-उल्फ़त[7] का असर देख रहें हैं।

---

1. रात की चीखो पुकार 2. शाही ताज 3. ज़लील 4. नज़र को जलाने वाला 5. खून रोती आंख 6. मेहरबानी 7. प्यार की आग।

आज क्या जाने, चमन वालों पे क्या गुज़री है ?
सिसकियां भरती हुई बादे-सबा[1] गुज़री है।
ज़िन्दगी मेरी जो गुज़री है तो क्या गुज़री है !
क़हर गुज़रा है मेरे सर से, बला गुज़री है।
हर नफ़स[2] इसने मुझे कूच का पैग़ाम दिया,
बन के हर सांस मेरी बांगे-दरा[3] गुज़री है।
मैंने कांटों से भी फूलों की तरह प्यार किया,
ज़िन्दगानी मेरी मानिंदे-सबा[4] गुज़री है।
किसी बेचारे का दिल टूट गया हो शायद,
दिल-शिकन[5] इक मेरे कानों में सदा गुज़री है।
अहले-गुलशन तो 'जिगर' ! फिर भी हैं अहले-गुलशन,
हम क़फ़स[6] वालों से तो बच के सबा गुज़री है।

---

1. हवा 2. सांस 3. घंटे की आवाज़ 4. हवा की तरह 5. दिल तोड़ने वाली 6. पिंजरा।

❋

रखते हैं तुझे दिल में महब्बत की तरह हम,
रहते हैं तेरे दिल में कदूरत[1] की तरह हम।
इस जन्म में हम तुझसे जुदा हो नहीं सकते,
आ बैठे हैं दिल में तेरे हसरत की तरह हम।
कोई नहीं ऐसा जो सुने बात हमारी,
इस दौर में गोया हैं नसीहत की तरह हम।
तुम खाओ क़सम हाथ मेरा हाथ में लेकर,
बदलेंगे कभीं हाथ न दौलत की तरह हम।
गो वक़्त ने चक्कर दिये हरदम हमें, लेकिन,
मरकज़ पे रहे सोजने-साअत[2] की तरह हम।
जिस रोज़ से ऐ दोस्त जुदा तुमसे हुये हैं,
हर इक के गले पड़ते हैं आफ़त की तरह हम।
वो हम को निगाहों से गिराकर बड़े ख़ुश हैं,
थे उनके लिये अश्के-नदामत[3] की तरह हम।
अफ़साने की मानिंद हमें भूलने वाले!
होंगे तेरे होटों पे कहावत की तरह हम।
बस इतनी तमन्ना है 'जिगर'! बाग़-जहां में,
उस गुल के रहें साथ ही नकहत[4] की तरह हम।

1. नफ़रत 2. घड़ी की सूई 3 शर्मिन्दिगी के आंसू 4. ख़ुशबू।

ज़बान से तो कभी हम ये कह नहीं सकते,
दुरुस्त है कि तेरे जौर सह नहीं सकते ।
चमक हज़ार हो क़तरे में, फिर भी क़तरा है,
हम इस पे क़तरे को गौहर तो कह नहीं सकते ।
निगाहे-शौक़ उठायेगी एक दिन पर्दा,
वो ख़ुद भी चाहें तो पर्दे में रह नहीं सकते ।
वो ज़ख्म क्या हैं ? न रिसते रहें जो सीने में,
वो अश्क क्या हैं ? जो आँखों से बह नहीं सकते।
ये और बात है, जो हम ख़मोश रहते हैं,
है वर्ना बात वो क्या, हम जो कह नहीं सकते ।
ज़बान रखने को रखते तो हैं दहन[1] में, मगर,
जो दिल की बात है, हम उनसे कह नहीं सकते ।
मैं उनकी सैकड़ों बेजा भी सुन रहा हूं, मगर,
वो मेरी एक बजा बात सह नहीं सकते ।
जो दुश्मनी किये जाता हो पर्दे पर्दे में,
हम ऐसे दोस्त को तो दोस्त कह नहीं सकते।
'जिगर' ! न कर कोई परवा तू नुकता-चीनों की,
वो नुकता-चीनी-ए-बेजा[2] से रह नहीं सकते ।

1, मूंह 2. बेसब्ब नुक्ताचीनी

बहा आंसू, मगर ऐ चश्मे-तर[1] ! आहिस्ता आहिस्ता,
शबे-ग़म[2] हो ही जायेगी बसर आहिस्ता आहिस्ता।
ख़ुशी क्या हो मुझे अरमानों के दिल से निकलने की ?
उजड़ता जा रहा है ये नगर आहिस्ता आहिस्ता।
मेरी ख़ुद्दारिओं ने इश्क़ की दुनिया बदल डाली,
बना हूं मुंतज़िर[3] से मुंतज़र[4] आहिस्ता आहिस्ता।
ज़मीं में हो चुके हैं दफ़न लाखों जौहरे-क़ाबिल[5],
ये मिट्टी खा गई कितने गौहर[6] आहिस्ता आहिस्ता।
हम उलटी राह पर तो गामज़न[7] रहते हैं तेज़ी से,
मगर चलते हैं सीधी राह पर आहिस्ता आहिस्ता।
न घबरा ज़िन्दगी के रंजो-ग़म से, ऐ दिले-नादां !
गुज़र जायेंगे ये शामो-सहर आहिस्ता आहिस्ता।
टपकते हैं तुम्हारी याद में जो मेरी आंखों से,
वो आंसू बन ही जायेंगे गौहर आहिस्ता आहिस्ता।
कहीं कोशिश से भी जाता है उनके इश्क़ का सौदा ?
'जिगर' ! जाने को जायेगा, मगर आहिस्ता आहिस्ता।

रोती आंख 2. ग़म की रात 3. प्रतीक्षा करने वाला 4. जिसकी
क्षा की गई हो 5. महापुरुष 6. मोती 7. चलना।

※

ख़ून रोयेगी शबो-रोज[1], ये रोना क्या है ?
चश्मे-तर ! तूने अभी इश्क़ में देखा क्या है ?
हम हैं अंजामें -महब्बत[2] से बख़ूबी वाक़िफ़,
हम को ऐ नासहे-नादां[3] ! तू डराता क्या है ?
मुझको बस अपना परस्तार[4] समझते रहिये,
ये तमन्ना है मेरी, और तमन्ना क्या है ?
पसे-पर्दा[5] तेरा हंसना, तेरा बातें करना,
फूल का खिलना, शगूफ़े का चटकना क्या है ?
जिस के दिल में तेरा जलवा हो मकीं[6] उसके लिये,
बुतकदा[7] क्या हैं ? हरम[8] क्या है ? कलीसा[9] क्या है ?
रंग अश्कों का गुलाबी सा है, हम क्या जानें ?
ख़ूने-दिल, ख़ूने जिगर, ख़ूने-तमन्ना क्या, है ?
रस्में-दुनिया की 'जिगर' ! इश्क़ को परवा क्यों हो ?
जो हो पाबंद किनारों का, वो दरिया क्या है ?

---

1. रात दिन 2. महव्वत का नतीजा 3. मूर्ख सलाहकार
4. पुजारी 5. पर्दे के पीछे 6. रहने वाला 7. मन्दिर
8. मसजिद 9. गिरजा घर।

ेरी याद ही से कुछ आजकल मुझे सुबहो-शाम क़रार है,
ेरे गुलस्ताने-हयात[1] में तेरी याद ही से बहार है।
ेरा दिल भी तू, मेरी जान तू, मेरी आन तू, मेरी शान तू,
ेरे दम से है मेरी ज़िन्दगी, तेरे दम से दिल को क़रार है।
ू हंसे तो लाला-ओ-गुल[2] खिलें, तू चले तो सर्व बलायें लें,
ू हर इक चमन की है ताज़गी, तू हर इक चमन की बहार है।
कोई और तुझ सा हसीं नहीं, कोई हो तो मुझको यक़ीं नहीं,
े तमाम हुस्ने-गुलो-समन[3], तेरे आगे मुश्ते-गुबार है।
जो नशा है तेरी निगाह में, वो नशा नहीं है शराब में,
है तेरे लबों में वो ताज़गी, गुले-तर[4] भी जिस पे निसार है।
ेरी आंख को तेरी जुस्तजू[5], मेरे दिल को भी तेरी आरज़ू,
ेरी आंख का भी तू नूर है, मेरे दिल का भी तू क़रार है।
ेरे हुस्न में है वो ताज़गी, जो बहार में भी न मिल सकी,
किसी फूल में भी न मिल सका, तेरे चेहरे पर जो निखार है।
दिले-ज़ार[6] की तो है बात क्या, मैं तो कर दूँ जाने-हज़ी[7] फ़िदा,
अगर एक बार तू ये कहे "जिगर' ! आप से मुझे प्यार है।"

जीवन-उपवन 2. फूल 3. फूलों की सुन्दरता 4. ताज़ा फूल
तलाश 6. ग़रीब दिल 7. दुखी आत्मा।

शबाब होता है ऐ शैख़ ! आशिक़ी के लिये,
न वक्फ़[1] कर इसे बे सूद[2] बन्दगी के लिये।
ख़ुशी के साथ ही वाबस्ता[3] रंज होता है,
न बेक़रार हो इतना भी तू ख़ुशी के लिये।
मुझे चिराग़ जलाने की क्या ज़रूरत है ?
ये दिल के दाग़ ही काफ़ी हैं रोशनी के लिये।
बहार आने को आई तो है चमन में, मगर,
तरस रहा है हर इक गुल शगुफ़तगी[4] के लिये।
उन्हीं की फ़िकर, उन्हीं का ख़याल, उन्हीं की बात,
नहीं अब और कोई शग़ल ज़िन्दगी के लिये।
ये 'कोहकन'[5] ने कहा और सर को फोड़ लिया,
"कलेजा चाहिये पत्थर का आशिक़ी के लिये।"
'जिगर' है नाम मेरा और ये है काम मेरा,
मैं ख़ून देता हूं इन्सां को ज़िन्दगी के लिये।

---

1. अर्पण 2. बेकार 3. जुड़ा हुआ 4. खिलाने के लिए
5. प्रेमी का नाम

किया साहिल ने जब हम से किनारा,
बढ़ा कर हाथ तूफ़ां ने पुकारा ।
ख़ज़ां आने को है शायद चमन में,
यहां अब जी नहीं लगता हमारा ।
डबोया जिस जगह भी ज़िन्दगी ने,
वहीं से मौत ने मुझको उभारा ।
मेरा दामन अभी ज़ेरे-रफ़ू है,
बहार आ भी गई जाकर दोबारा ।
अजल[1] को पा लिया उमरे-खां[2] ने,
सफ़ीने को मिला आख़िर किनारा ।
मिली सय्याद[3] को अब बाग़बानी,
गुलिस्तां में नहीं मुमकिन गुज़ारा ।
कलेजे से लगा रहता है हर दम,
तुम्हारा ग़म न हो क्यों तुमसे प्यारा ?
यक़ीनन तुम मेरे क़ातिल नहीं हो ,
ज़माना नाम लेता है तुम्हारा ।
नज़र उठती नहीं पहली झलक से,
'जिगर'! देखूं उन्हें क्यों-कर दोबारा ?

. मौत 2. चलता हुआ जीवन 3. शिकारी

किसी सूरत भी ख़ूये-मयकशी[1] अच्छी नहीं होती,
मिले मय मुफ़्त की तो मुफ़्त भी अच्छी नहीं होती।
करे बर्बाद जो अपना वतन, वो नौजवां क्या है ?
जला दे घर को जो वो रोशनी अच्छी नहीं होती।
हमारा नज़रिया उसको बुरी अच्छी बनाता है,
ज़माने में कोई शै ख़ुद बुरी अच्छी नहीं होती।
ये जी का रोग बन जाती है इक दिन, ऐ दिले-नादां !
हसीनों से ज़यादा दिल्लगी अच्छी नहीं होती।
दिल ऐसा दोस्त बन जाता है सौ दुश्मन का इक दुश्मन,
इन अच्छी सूरतों से दोस्ती अच्छी नहीं होती।
कोई आफ़त, कोई फ़ितना, कोई ख़ंजर, कोई निश्तर,
अदा उस दुश्मने-जां[2] की कोई अच्छी नहीं होती।
कहां तक ऐ 'जिगर' ! समझाऊं उस नाज़ुक तबीयत को,
कि हर इक बात पर नाराज़गी अच्छी नहीं होती।

---

1. शराब की आदत 2. महबूब

हज़ारों ग़म हैं, इक जाने-हज़ी[1] है,
कोई बचने की सूरत अब नहीं है।
उन्हीं का ग़म फ़क़त दिल में मकीं[2] है,
हमें अब और कोई ग़म नहीं है।
बशर की हड्डियां तक इसने खा लीं,
फ़लक से बढ़ के ज़ालिम ये ज़मीं है।
कोई पर्दा उठाने को है मुज़्तर[3],
निगाहे शौक! तुझ पर आफ़रीं[4] है।
किसी के वास्ते है ज़हर दुनिया,
किसी के वास्ते ये अंगबीं[5] है।
महब्बत फूल तो है ख़ूबसूरत,
मगर इस फूल में ख़ुशबू नहीं है।
न हो जिसको अदू[6] से भी अदावत,
वो दिल कुछ जामे-जम[7] से कम नहीं है।
नहीं जिस दिल में कोई भी तमन्ना,
वो है इक फूल जिसमें बू नहीं है।
निशां तीरे-नज़र का पूछते हो?
'जिगर' के पास है दिल के क़रीं[8] है।

1. दुखी आत्मा 2. रहने वाला 3. बेचैन 4. शाबाश 5. अमृत 6. शत्रु 7. जमशेद बादशाह का प्याला 8. क़रीब

निक़ाब इसलिये रुख़ से उठाई जाती है,
हमारी ताबे-नज़र[1] आज़माई जाती है।
छुपा के चेहरे को रखना फ़ज़ूल है, ऐ दोस्त !
जो चीज़ देखने की हो, दिखाई जाती है।
मिलायें दिल से वो दिल क्या, यही ग़नीमत जान,
कभी कभी जो नज़र ही मिलाई जाती है।
किसी से बज़म में वो हंस के बात करते हैं,
किसी के सीने पे बिजली गिराई जाती है।
सरिशते-ख़ार[2] न बदली गुलों की सोहबत में,
बुरे हैं जो, कभी उनकी बुराई जाती है ?
जो शक्ल सिर्फ़ हमीं को दिखाई जाती थी,
ग़ज़ब है, आज हमीं से छुपाई जाती है।
ग़ुबारे-दिल[3] न मिटा उनका मेरे मिटने पे भी,
जगह जगह मेरी मिट्टी उड़ाई जाती है।
हम इन बुतों को 'जिगर' ! क्यों न फिर ख़ुदा मानें ?
जिधर ये जाते हैं, सारी ख़ुदाई जाती है।

---

1. देखने की ताक़त 2. काटें की आदत 3. दिल का धुआं।

ऐसा तूफ़ान उठा दीदा-ए-तर[1] ! आज की रात,
जाने पायें न किसी तौर वो घर आज की रात।
मेरे घर ठहरेगा वो रश्के-क़मर[2] आज की रात,
चांद को सौपूंगा दरबानी-ए-दर[3] आज की रात।
सामने बैठे हैं वो रूप सुनहरी लेकर,
तारे-ज़रीं[4] है मेरा तारे-नज़र[5] आज की रात।
ले के आया है कोई सुर्ख़ चमकता चेहरा,
क्यों न तक़सीम करूं लालो-गौहर आज की रात।
चांद सा हुस्न है, सूरज सी जवानी उसकी,
हैं व्यक[6] वक्त वहम[7] श्मसो-क़मर[8] आज की रात।
न हो दौराने-मुलाक़ात[9] में दिन का खटका,
ऐ फ़लक ! काट दे तू वक़्त के 'पर' आज की रात।
कल मुलाक़ात का वादा है किसी ख़ुश-रू[10] से,
रात मुझको है क़यामत की 'जिगर' ! आज की रात।

---

1. रोती आँख 2. चांद से सुन्दर 3. पहरेदारी 4. सुनहरी तार
5. नज़र का तार 6. एक ही समय 7. इकट्ठे 8. सूरज और चांद
9. मुलाक़ात के वक्त 10. सुन्दर।

"भूल जा अब तू उसे, मौत चली आती है,"
मुझको यारों की नसीहत पे हंसी आती है।
तू बता अब मैं तेरा प्यार छुपाऊं कैसे ?
मेरी हर सांस से आवाज तेरी आती है।
किस को मालूम कि वो शख़्स है किस मुश्किल में ?
जिसके लब पर बड़ी मुश्किल से हंसी आती है।
जलवा-गर रहता है हर दम जो मेरे दिल में, उसे,
सामने आते हुये शर्म बड़ी आती है।
उसको किस बात का डर है, ये ख़ुदा ही जाने,
सहमी सहमी सी मेरे दिल में ख़ुशी आती है।
दोस्तो ! आप का इरशाद बजा है, लेकिन,
दिल में जब ग़म हों तो कब लब पे हंसी आती है ?
रुख़सते-यार[1] के बाद अपनी ख़बर लेने को,
अश्क आते हैं कभी, आह कभी आती है।
कोई हंस देता है जिस वक़्त मेरे रोने पर,
मुझको रोने पे 'जिगर' ! ख़ुद भी हंसी आती है।

1. बिदाई

ये बात सोच लो पहले हमें उठाने से,
रहेगा बज़्म में फिर क्या हमारे जाने से ?
है वक़्ते-नज़ा[1], न यूँ हम से रूठ कर जाओ,
जो रूठे हम तो न मानेंगे फिर मनाने से।
किसी की बज़्म में जाने से रोकने वालो !
मेरे ख़याल को रोकेगा कौन जाने से ?
जो मिल सके तुझे, ले ले तू ग़म का सरमाया,
कोई ख़ज़ाना नहीं बढ़ कर इस ख़ज़ाने से।
किसी के कूचे में जाने को मुज़तरब[2] हूं बहुत,
दिले-हज़ीं[3] ! मुझे ले चल किसी बहाने से।
उसे मनाने की सूरत मुझे बताये कोई,
जो रूठे और ज़यादा मनाये जाने से।
बग़ौर[4] सुनता ही कोई नहीं 'जिगर' ! इस को,
सदाये-नौहा[5] भी आती है शादीआने[6] से।

---

1. आख़िरी समय 2. बेक़रार 3. दुखी दिल 4. ध्यान से 5. रोने की आवाज़ 6. बाजा।

हो जाते हैं ऐसे भी कई काम बशर से,
गिर जाता है खुद आप ही वो अपनी नज़र से।
तशबीह[1] न दे उनको अबस[2] शमसो-क़मर[3] से,
वो क्या हैं, ज़रा पूछ तो ले अहले-नज़र से।
उल्फ़त में गिरे अश्क अगर दीदा-ए-तर[4] से,
क़ीमत में ज़यादा है कहीं लालो-गौहर से।
दिलकश है तेरा हुस्न बहारों से ज़यादा,
पुर-नूर[5] तेरा रुख़ है सिवा नूरे-सहर[6] से।
सर जाता है, जाये, नहीं परवा मुझे, लेकिन,
ऐ दोस्त! न जाये तेरा सौदा मेरे सर से।
या रब! है अजब जिन्दगियो-मर्ग[7] का चक्कर,
आता हूं उधर से, कभी जाता हूं इधर से।
उस महवे-तग़ाफ़ुल[8] को बता दो 'जिगर'! इतना,
हम खींच के लायेंगे महब्बत के असर से।

---

1. मुक़ाबला 2. व्यर्थ 3. सूरज और चांद 4. रोती आंख
5. प्रकाशमय 6. सुबह की रोशनी 7. जीवन और मृत्यु 8. बे परवाह

तुम हुस्न को न देखो ख़रीदार की तरह,
सौदा नहीं ये सौदा-ए-बाज़ार[1] की तरह।
जो ख़ुद कभी थे सुबहे-ज़याबार[2] की तरह,
मोहताजे-रोशनी[3] हैं शबे-तार[4] की तरह।
दुनियां ने उसको जैसा भी चाहा बना दिया,
जो शख़्स चुप रहा दरो-दीवार की तरह।
उल्फ़त को अब जहां में कोई पूछता नहीं,
फिरती है ख़वार आज के फ़नकार की तरह।
दामन को मोतियों से कई बार भर दिया,
है आंख अपनी अबरे-गौहर-बार[5] की तरह।
फूलों से पत्थरों का दिया करते हैं जवाब,
अपना चलन है शाख़े-समरदार[6] की तरह।
हरगिज़ किसी को साये में अपने न लीजिये,
जलना पड़ेगा धूप में अशजार[7] की तरह।
हर रोज़ वास्ता है नई वारदात से,
अपनी हयात बन गई अख़बार की तरह।
असरारे-जिन्दगी[8] से 'जिगर'! जो हैं आशना[9],
सूली क़बूल करते हैं वो हार की तरह।

1. ख़रीदने की वस्तु 2. उजली सुबह 3. रोशनी का ज़रूरत मंद 4. अंधेरी रात 5. मोती बरसाने वाला बादल 6. फलदार शाख़ा 7. पेड़ 8. ज़िन्दगी का भेद 9. परिचित।

☀

चेहरे पे आशकार[1] है नूर आफ़ताब[2] का,
जलवों से काम लेता है कोई हिजाब[3] का।
इक गर्दबाद[4] था जो उड़ाता फिरा मुझे,
क्या पूछते हो, क्या था ज़माना शबाब का !
धोके दिये हैं मुझ को ज़माने ने इस क़दर,
दरिया पे हो रहा है गुमां अब सराब[5] का।
डाली गुलाब की है ये नाज़ुक बदन तेरा,
चेहरा तेरा है फूल शगुफ़ता गुलाब का।
दरियाये-मौज-ज़न[6] हो कि हो मेहरे-नीम-रोज़[7],
कोई नहीं जवाब तुम्हारे शबाब का।
ओ बे-नयाज़[8] ! इतना ही लिख दे जवाब में,
बेकार मुंतज़िर है तू ख़त के जवाब का।
सूझा ये क्या मज़ाक तुझे आज, साक़िया,
सौ रिंद और एक प्याला शराब का।
देखा 'जिगर' ! जब उन को लबे-बाम[9] बेनिक़ाब,
रह रह के रंग उड़ने लगा आफ़ताब का ।

---

1. ज़ाहिर 2. सूर्य 3. पर्दा 4. बगूला 5. चमकीली रेत 6. लहरे मारने वाला दरिया 7. दोपहर का सूर्य 8. बेपरवाह 9. छत पर।

कोई पर्दा नज़र नहीं आता,
फिर भी जलवा नज़र नहीं आता।
जो बुरे हैं, उन्हे ज़माने में,
कोई अच्छा नज़र नहीं आता।
उसके जलवे तो आम हैं लेकिन,
आंख वाला नजर नहीं आता।
सब ख़ुदा बन गये ज़माने में,
कोई बंदा नज़र नहीं आता।
जल रहा हूं मैं रात दिन, लेकिन,
कोई शोला नज़र नहीं आता।
तेरी महफ़िल भी कैसी महफ़िल है ?
कोई अपना नजर नहीं आता।
हम ने दर दर की ख़ाक छानी है,
कोई तुझ सा नज़र नहीं आता।
उनके क़दमों पे जब गिरा तो कहा,
"आपको क्या नज़र नहीं आता ?"
ऐ 'जिगर' ! उनकी चाल से बढ़ कर,
कोई फ़ितना[1] नज़र नहीं आता।

---

[1] साद

तूने सितम मुझ पे किया, क्या किया ?
अपने परसतार[1] को रुसवा किया।
ये तो बजा[2], आप ने वादा किया,
ये भी कहें, कब उसे पूरा किया ?
मौत को मैं क्यों न मसीहा कहूं ?
उसने मेरे दर्द का चारा किया।
उठ न सके पूरी तरह रंजो-ग़म,
कितना बड़ा उमर ने धोका किया।
दाग़ दिये, रंज दिये, ग़म दिये,
जो भी किया आपने अच्छा किया।
क्यों न करूं जान मैं तुझ पर निसार ?
हक़ ने इसी के लिये पैदा किया।
शग़ल मेरा था ये तेरे हिजर में,
दिन को फ़ुगां[3], रात को नाला किया।
गुल की तरह हो गया वो बे-दहन,
जिस ने 'जिगर'! दहर में लब वा[4] किया।

1. पुजारी 2. उचित 3. आह भरना 4. मूंह खोलना।

बशर को चाहिये बच कर रहे ग्रहदे जवानी में,
इसी वक़्त ग्राते हैं तूफ़ान बहरे-ज़िन्दगानी[1] में।
मेरी ग्रांखों से शोलों की तरह ग्रांसू निकलते हैं,
ख़ुदा जाने लगा दी है ये किसने ग्राग पानी में?
जवानी का ज़माना गो क़यामत–ख़ेज़[2] होता है,
मगर इसके सिवा कुछ भी नहीं है ज़िन्दगानी में।
ये फ़ितरत ग्रपनी चिंगारी उगलने की न छोड़ेगा,
हज़ारों साल रख कर देखिये पत्थर को पानी में।
किसी का मक़बरा भी क़ीमती पत्थर से बनता है,
तरसता है कोई छप्पर की खातिर ज़िन्दगानी में।
कोई जब मेहरबाँ होता है तो दिल कांप उठता है,
न जाने क्या नज़र ग्राता है इस को मेहरबानी में?
मेरे पहलू में तू बैठे, तेरे पहलू में मैं बैठूँ,
दो ऐसे दिन भी ग्रायें चार दिन की ज़िन्दगानी में।
मेरी ग्रांखों में ग्रांसू देख कर वो सहम जाते हैं,
उन्हें शायद खबर है बिजलियां होती हैं पानी में।
ज़माना ख़ुद-ब-ख़ुद मजबूर हो जायेगा सुनने को,
'जिगर'! कुछ बात पैदा कीजिये ग्रपनी कहानी में।

---

1. जीवन-सागर 2. ख़तरनाक

❋

आप का इंतज़ार कौन करे ?
दिल को उम्मीदवार कौन करे ?
पासे-क़ौलो-क़रार[1] तुम को नहीं ?
तुम से क़ौलो-क़रार कौन करे ?
देख कर गुल के चाके-दामन को,
आरज़ु-ए-बहार कौन करे ?
जिस की तक़दीर में हो ग़रक़ाबी[2],
उस सफ़ीने[3] को पार कौन करे ?
कोई आंसू तो पोंछता ही नहीं,
आंख को अश्कबार[4] कौन करे ?
मस्त कर दें जिसे तेरी आंखें,
उस को फिर होशियार कौन करे ?
तेरी बातों पे, तेरे वादों पर,
बार बार एतबार कौन करे ?
इस की हर मौज है क़यामत-ख़ेज़,
बहरे-उल्फ़त[5] को पार कौन करे ?
ये ज़माना तो बेवफ़ा है 'जिगर',
इस ज़माने से प्यार कौन करे ?

---

1. वादे का लिहाज़ 2. डूबना 3. नाव 4. आंसू बरसाना
5. प्यार का सागर।

एक पैमाने से हर इक को पिला दे साक़ी।
अदनाओ-आला[1] की तफ़रीक़[2] मिटा दे साक़ी।
रहन रखने को मैं तैयार हूं अपनी हस्ती,
तू जो मयख़ाना मेरे नाम लगा दे साक़ी !
तेरे मयख़ाने में रौनक़ है मेरे ही दम से,
हश्र[3] तक ज़िंदा रहूं मैं, ये दुआ दे साक़ी !
देख ये अदनाओ-आला की बिना[4] हर तक़सीम,
कहीं मयख़ाने की अज़मत[5] न घटा दे साक़ी !
तेरे मयख़ाने की ख़ैर, ऐसी पिला दे मुझ को,
हश्र तक जो मुझे मस्ताना बना दे साक़ी !
दस्ते-नाज़ुक[6] से उठायेगा कहां तक साग़र ?
मस्त नज़रों से बस इक जाम पिला दे साक़ी !
अब किसी तौर संभाला नहीं जाता मुझ से,
जामे-मय ख़ुद मेरे होंटों से लगा दे साक़ी !
देख, इन प्यासों की आहों का सरशकों[7] का हजूम,
मयकदे में कोई तूफ़ां न उठा दे साक़ी !
जामो-पैमाना उठाने की ज़रूरत न पड़े,
एक ही शे'र 'जिगर' का तू सुना दे साक़ी !

छोटा और बड़ा 2. फ़र्क़ 3. प्रलय 4. आधार 5. बड़प्पन
कोमल हाथ 7. आंसू।

जो है दरवेश[1] ब.दाख़ाने[2] का,
उसको कुछ ग़म नहीं ज़माने का।
आप आये तो बन गया ख़ुरशीद[3],
ज़र्रा ज़र्रा ग़रीबख़ाने का।
रफ़ता रफ़ता मेरी जबीने-न्याज़[4],
बन गई जुज़व[5] आसताने का।
मैकशों की दुआ क़बूल हुई,
खुल गया दर शराबख़ाने का।
ज़ुल्म है ये क़फ़स-नसीबों[6] पर,
ज़िक्र छेड़ो न आशियाने का।
यूं पड़ा हूं उस आसताने पर,
जैसे पत्थर हो आसताने का।
दिल नहीं है वो और ही कुछ है,
दर्द जिस में नहीं ज़माने का।
ये चमन-ज़ार[7] ये शबे-महताब,[8]
नाम ऐसे में लो न जाने का।
दोनो आलम की दास्ताने-तवील[9],
इक वरक़ है मेरे फ़साने का।
मिल के अश्कों में ख़ूने-दिल ने 'जिगर'!
रंग बदला मेरे फ़साने का।

1. फ़कीर 2, शराबख़ाना 3· सूरज 4. झुकने वाला मस्तक 5. हिस्सा 6. कैदी 7. बाग़ 8. चांदनी रात 9. लम्बी कहानी

कोई रह रह के याद आता है,
दिल का सबरो-क़रार जाता है।
जो भी दुनिया से दिल लगाता है,
ज़िन्दगी भर वो ग़म उठाता है।
जीते जी भी सकूं नसीब किसे?
मर के भी कौन चैन पाता है?
छोड़ जाते हैं सब रफ़ीको-अज़ीज़[1],
कौन मुश्किल में काम आता है?
मेरे दिल में है किसकी जलवा-गरी[2]?
दिल का हर गोशा जगमगाता है।
साथ जाते हैं दिल के अरमां भी,
कौन तन्हा जहां से जाता है?
राज़े-ग़म[3] जिस पे फ़ाश हो जाये,
ग़म ख़ुशी से वही उठाता है।
बढ़ती जाती है आतिशे-उल्फ़त[4],
कोई जितना इसे बुझाता है।
आदमी जानिये उसी को 'जिगर'!
आदमी के जो काम आता है।

दोस्त मित्र 2. बसेरा 3. ग़म का भेद 4. प्यार की आग।

अल्लाह री, ये सरदी-ए-बाज़ारे-महब्बत,
मिलता ही नहीं कोई ख़रीदारे-महब्बत।
गो रास भी दिल को नहीं आज़ारे-महब्बत,
रहता है मगर फिर भी तलबगारे-महब्बत।
तकरार किसी बात में अच्छी नहीं होती,
पुर-लुत्फ़ मगर होती है तकरारे-महब्बत।
बाज़ारे-महब्बत की है गर्मी मेरे दम से,
ढूंढोगे मेरे बाद ख़रीदारे-महब्बत।
हैं दीद के क़ाबिल मेरे दाग़ों की बहारें,
देखो तो ज़रा आ के ये गुलज़ारे-महब्बत।
महसूस जो होती है कमी दिल की ख़लिश में,
सीने में चुभो लेता हूं फिर ख़ारे-महब्बत।
क्या उठ गये दुनिया से तेरे चाहने वाले ?
वीरान नज़र आता है बाज़ारे-महब्बत।
मनसूर के लब पर था सरे-दार[1] ये कलमा,
"सर दे जो महब्बत में, है सरदारे-महब्बत"।
बढ़ता ही चला जाता है ये रोग जहां में,
हर शख़्स 'जिगर'! होता है बीमारे-महब्बत।

1. सूली पर

सीने में अगर दिल है तो दिलदार बहुत हैं,
इस माल के दुनिया में ख़रीदार बहुत हैं।
आराम कहां इश्क़ में ? आज़ार बहुत हैं,
इस बाग़ में गुल कम हैं, मगर ख़ार बहुत हैं।
अब शर्बते-दीदार वो किस किस को पिलायें ?
पास उनके अनार एक है, बीमार बहुत हैं।
क्यों ऐ निगाहे-नाज़[1] तेरे नाज़ उठाऊं ?
जब दिल के लिये खंजरे-ख़ूंख़ार[2] बहुत हैं।
वो जितने वफ़ादार हैं, किस को नहीं मालूम ?
कहने को तो कहता हूं, वफ़ादार बहुत हैं।
अब देखना ये है, कोई पाता है शिफ़ा[3] भी ?
उस नरगिसे-बीमार[4] के बीमार बहुत हैं।
इन शोख़ हसीनों से 'जिगर' ! दूर ही रहना,
अय्यार[5] बहुत हैं ये, दिल-आज़ार[6] बहुत हैं।

---

1. महबूब की नज़र 2. ख़ूनी ख़ंजर 3. तंदरुस्त 4. महबूब की आंख
5. मक्कार 6. दिल दुखाने वाले।

अव्वल तो वो हमसे कोई वादा नहीं करते,
करते भी हैं तो फिर उसे पूरा नहीं करते।
अपने से हसीं को वो गवारा नहीं करते,
अब ख़ैर से आईना भी देखा नहीं करते।
उस बुत को मेरे अश्क़ों पे रहम आये तो क्योंकर ?
पत्थर कभी पानी से तो पिघला नहीं करते।
परवाने से कुछ कम नहीं सोज़े-जिगर अपना,
हम इसका मगर बज़म में चर्चा नहीं करते।
उस गुल की जफ़ाओ पे भी ख़ामोश रहे हैं,
बुलबुल की तरह हम उसे रुसवा नहीं करते।
हम से अगर उनको कोई शिकवा है तो ये है,
हम उन से किसी बात का शिकवा नहीं करते।
जिस बात पे हो बाद में कुछ हम को नदामत[1],
वो बात कभी मुंह से निकाला नहीं करते।
शबनम ने कुछ अच्छा न किया महफ़िले-गुल[2] में,
हंसतों को 'जिगर'! देख के रोया नहीं करते।

1. पछतावा 2. फूलों की महफ़िल

महफ़िल में होश-रुबा[1] जलवे दानिसता[2] दिखाये जाते हैं,
हम ख़ुद नहीं बनते दीवाने, दीवाने बनाये जाते हैं।
नरगिस की सी आंखें, सर्व सा क़द, लाले[3] का सा रुख़, गुल की सी हंसी,
अंदाज़ सरासर गुलशन के उस शोख़ में पाये जाते हैं।
गिर जाये जो नज़रों से कोई, फिर उसको उठाना मुशक़िल है,
जो तारे अर्श से टूटते हैं, कब अर्श पे लाये जाते हैं ?
दसतूर निराला ही देखा हमने तो तुम्हारी महफ़िल का,
बेगाने बिठाये जाते हैं और अपने उठाये जाते हैं।
हम हुस्नो–इश्क़ के झगड़े को इक रोज़ मिटा कर छोड़ेंगे,
वो हम में समाये जाते हैं, हम उन में समाये जाते हैं।
ख़ुद्दारी-ए-दिल पर क्या गुज़री, हम से ये बात न पूछियेगा,
होकर मजबूरे-इश्क़ो–वफ़ा नाज़ उनके उठाये जाते हैं।
जो लोग क़दम रखते हैं 'जिगर'! इश्क़ो-उल्फ़त की वादी में,
वो नक़्शे-कफ़े-पा[4] की सूरत मिट्टी में मिलाये जाते हैं।

---

1. होश उड़ाने वाले 2. जान बूझ कर 3. सुर्ख़ फूल 4. तलवे का निशान।

ऐसे कम देखने में आये हैं,
ग़म में जो लोग मुस्कराये हैं।
आप जिस वक़्त मुस्कराये हैं,
दहर[1] में इन्क़लाब आये हैं।
पर्दा-दारी तो देखिये उनकी,
ख्वाब में पर्दा कर के आये हैं।
रहता है उनके रूबरू हर वक़्त,
क्या नसीब आईने ने पाये हैं।
रोज़े-फ़ुरक़त[2] जिगर के दाग़ों ने,
दिन को तारे हमें दिखाये हैं।
चांद तारों से भी हसीं चेहरे,
मौत ने खाक में मिलाये हैं।
देख ! वो आसमां पे माहो-नजूम[3],
तेरा दीदार करने आये हैं।
तेरे बीमारे-ग़म की पुरसिश[4] को,
जो गये हैं उदास आये हैं।
आप की एक मुस्कराहट पर,
हमने क़लबो-जिगर[5] लुटाये हैं।
ऐ 'जिगर' ! देख, खोल भी आंखें,
पुरसिशे-हाल[6] को वो आये हैं।

---

1. दुनिया 2. जुदाई के दिन 3. चांद-तारे 4. हाल चाल पूछना 5. दिल-जिगर 6. हाल पूछना।

क़द्र मर कर ही हुग्रा करती है दीवानों की,
शमा भी रोती है ग्रब ख़ाक पे परवानों की ।
दिल से ग्ररमान किसी तौर निकलते ही नहीं,
इतनी जुरग्रत कभी देखी न थी महमानों की ।
हाथ फूलों को लगायें तो वो शोले बन जायें,
देखे क़िसमत कोई हम सोख़ता-सामानों की[1] ।
ख़ूने-दिल हम ने पिलाया है तेरे तीरों को,
इतनी ख़ातिर कोई करता नहीं महमानों को ।
रूख़े-ताबां[2] से उठाया जो किसी ने पर्दा,
किस क़दर भीड़ हुई बज़म में परवानों की ।
जो फ़रिश्तों के थे हाकिम, वो हैं बन्दों के ग़ुलाम,
इतनी उफ़ताद[3] ! इलाही तेरे इन्सानों की ।
इस में जल जल के हर इक ख़ाक हुग्रा जाता है,
मेरा दिल एक चिता है मेरे ग्ररमानों की ।
ज़ब्ते-फ़रयाद-फ़ुग़ा[4] से है मेरे दिल का ये हाल,
जैसे ज़द में हो सफ़ीना कोई तूफ़ानों की ।
ऐ 'जिगर' ! जिन पे गुलो-सर्व के साये थे कभी,
छानते फिरते हैं वो ख़ाक बियाबानों की ।

---

1. बदनसीब 2. चमकीला चेहरा 3. गिरावट 4. आह रोकना ।

दिले-बे-ख़िरद[1] ने मेरी इक न मानी,
महब्बत के हाथों लुटा दी जवानी ।
सुनी आप ने मेरे ग़म की कहानी,
नवाज़िस, इनायत, करम, मेहरबानी ।
कोई ज़िन्दगी की तमन्ना न करता,
अगर इस में होता न अहदे-जवानी[2] ।
तेरे रूयेज़ेबा[3] को देखा जो उस ने,
हुआ आईना शर्म से पानी पानी ।
जमाने में मशहूर हैं दो ही बातें,
हमारी महब्बत, तुम्हारी जवानी ।
बस अब ख़त्म कर ग़म के क़िस्से को ऐ दिल !
कहां तक सुने कोई तेरी कहानी ।
महब्बत की बाज़ी अगर जीतनी है,
लगा दे 'जिगर' ! दाव पर ज़िन्दगानी ।

---

1. बे अक्ल 2. जवानी का ज़माना 3. प्यारी सूरत।

उनका रुख़ फूल खिला हो जैसे,
उनका क़द सर्व खड़ा हो जैसे ।
एक पल हिजर का तौबा, तौबा !
एक युग बीत गया हो जैसे ।
तेरे दीवाने के गिर्द इतना हजूम ?
उसमें भी तेरी अदा हो जैसे ।
उनकी फ़ुरक़त में मेरा हाल हाल न पूछ,
शाख़ से फूल जुदा हो जैसे ।
जां-फ़ज़ा[1] आज है यूं बादे-सबा[2],
तेरी सांसों की हवा हो जैसे ।
ये जवानी, ये तेरा हुस्नो-जमाल[3] ।
हश्र[4] में हश्र बपा हो जैसे ।
आज यूं खुश नज़र आता हैं दिल,
उनका दीदार हुआ हो जैसे ।
दिल में रह रह के ये आता है खयाल,
वो मुझे भूल गया हो जैसे ।
'जिगर' ! उस बुत ही का ज़िक्र आठों पहर,
वही इक तेरा खुदा हो जैसे ।

1. आत्मा खुश करने वाली 2. हवा 3. सुन्दरता 4. क़यामत ।

जलता है शबे-हिजर[1] मेरा दिल भी जिगर भी,
सीने में मेरे आग इधर भी है उधर भी।
क्यों खाक उड़ाने को मैं वीराने में जाऊं ?
वीराने से कुछ कम नहीं वीरां मेरा घर भी।
मूंह फेर के महफ़िल में उधर बैठने वाले,
बैठे हैं तेरे तालिबे-दीदार[2] इधर भी।
दिल को तो दिखाये हैं बहुत आपने जलवे,
इन फूलों से भर दें मेरा दामाने-नज़र भी।
बेसूद[4] है ये दूरी-ए-मंज़िल की शिकायत,
पहले ये कहो, दिल में है क्या अज़मे-सफ़र[5] भी ?
क्या फ़ितने उठाये हैं तेरी चाल ने हर सू,
हंगामा-ए-महशर[6] है बपा, देखें जिधर भी।
जाते हो मेरे दिल से तो ये बात भी सोचो,
मिल जायेगा तुमको कहीं इस शान का घर भी ?
उस बुत का ही दीवाना बनाना था जो मुझ को,
यारब ! मुझे फिर देना था पत्थर का 'जिगर' भी।

---

1. जुदाई की रात 2, दर्शनाभिलाशी 3. नज़र का दामन 4. व्यर्थ
5. सफ़र का इरादा 6. प्रलय का शोर।

बे-मुदआ[1] किसी को कोई चाहता नहीं,
मैं चाहता हूं तुझ को, कोई मुदआ नहीं।
मैं तो ये कह रहा हूं कि तू बे-वफ़ा नहीं,
दुनिया जो कह रही है, वो तूने सुना नहीं?
झुकते हैं आदमी ही के क़दमों पर आदमी,
फिर भी ये लोग कहते हैं, बन्दा ख़ुदा नहीं।
सांस आये ज़िन्दगी है, न आये तो मौत है,
मौत और ज़िन्दगी में कोई फ़ासिला नहीं।
रूप असली देखना है अगर, अपने दिल में झांक,
दुनिया में इस से बढ़ के कोई आईना नहीं।
कुछ भी नहीं है हुस्न, मगर पूछते हैं सब,
सब कुछ है इश्क़, इसको कोई पूछता नहीं।
लब पर तेरे 'जिगर' की बुराई है रात दिन,
अच्छा तो वो नहीं, मगर इतना बुरा नहीं।

---

1. बे-मक़सद।

सामने अपने सुराही, जाम, पैमाना रहे,
उमर भर ऐ काश ! इन यारों से याराना रहे।
गुल के बुलबुल, शमा के नज़दीक परवाना रहे,
किस तरह फिर दूर तुझसे तेरा दीवाना रहे ?
रह के गरदिश में भी इनसां ख़िदमते-ईनसां[1] करे,
इस जहां के मयकदे[2] में बन के पैमाना रहे।
देख कर जलवे बुतों के दिल से निकली ये दुआ,
"या इलाही हश्र तक आबाद बुतख़ाना रहे।"
अक़ल वाले को ज़माने में हैं लाखों रंजो-ग़म,
इन से बच सकता है वो, जो बन के दीवाना रहे।
इस की मिट्टी में है हम गरदिश-नसीबों[3] का ख़मीर,
ज़िन्दगी भर क्यों न फिर गरदिश में पैमाना रहे ?
साक़ीया ! कुछ इस तरह तक़सींम का कर इंतज़ाम,
बज़म में ख़ाली किसी का भी न पैमाना रहे।
शौक़ इतना है उन्हें बनने संवरने का 'जिगर' !
चाहते हैं पास आईना रहे, शाना[4] रहे।

1. जन सेवा 2. शराब खाना 3. बदनसीब 4. कंघी।

तुम हमारे मरने पर क्यों रोने चिल्लाने लगे ?
हम मुसाफ़िर थे यहां, अब अपने घर जाने लगे।
हो के नाज़ुक-तन ग़मे-दौरां[1] के मूंह आने लगे,
हम वो आईने हैं, जो पत्थर से टकराने लगे।
ऐ महब्बद ! तूने क्या से क्या बना डाला हमें,
जिन को समझाते थे हम, वो हमको समझाने लगे।
मैं तो इस उम्मीद पर आया था, तुम पोंछोगे अश्क,
तुम तो ख़ुद हमराह मेरे अश्क टपकाने लगे।
मैं दुआयों पर दुआयें दे रहा हूं मौत को,
वो जो बरसाते थे पत्थर, फूल बरसाने लगे।
हम तो समझे थे कि घबरायेंगे आहे-सर्द[2] से,
वो बड़े आराम से ठंडी हवा खाने लगे।
ऐ मुसव्विर ! खींच ऐसे ढंग से तस्वीरे-यार,
एक एक उसकी अदा जिस में नज़र आने लगे।
जब हुये वो बा-ख़बर अपनी अदाओं से 'जिगर' !
आईने के सामने आने से घबराने लगे।

1. ज़माने का ग़म 2. सर्द आह।

वो पास हैं, सबज़ा[1] है, लबे-जू[2] है, घटा है,
ऐसे में ख़ता-कोश[3] न होना भी ख़ता है।
बढ़ने को बशर चांद से भी आगे बढ़ा है,
ये देखिऐ किरदार बढ़ा है कि घटा है।
ये मान लिया जौरो-सितम मुझ पे रवा है,
इतना तो बता दीजिऐ क्या मेरी ख़ता है ?
मंज़ूर किसी को भी नहीं ख़ाक में मिलना,
आंसू भी लरज़ता हुआ आंखों से गिरा है।
मैं कहता हूं "अब और सितम सह नहीं सकता",
वो कहते हैं "हम ने अभी आग़ाज़ किया है"।
क्यों जाऊं न अपनी निगाहे-शौक़[4] के क़ुरबां,
सौ पर्दों में भी इस ने तुझे देख लिया है।
मैं हार के जब बैठ गया, दिल ने सदा दी,
"आ, उस से मिला दूं, तू जिसे ढूंड रहा है।"
इस दौर में कहते हैं शराफ़त नहीं चलती,
हम ने तो शराफ़त से बड़ा काम लिया है।
कहने को तो कहते हैं तुझे लोग मसीहा,
क्या पास तेरे दर्दे-जिगर की भी दवा है ?

1. हरियाली 2. नदी का किनारा 3. गुनाहगार 4. शौक़ीन नज़र।

सीने में सोज़े इश्क़ है, लब पर फ़ुग़ां नहीं,
यारब ! ये कैसी आग है जिसका धुआं नहीं।
दिल हो कि सीना, दर्द की शिद्दत[1] कहां नहीं ?
ये और बात है मेरे लब पर फ़ुग़ां नहीं।
जब कुछ कहूं तो होता है इरशाद "चुप रहो",
रहता हूं चुप तो कहते हैं "मूंह में ज़बां नहीं" ?
झुकता है हर किसी का तेरे आस्तां पे सर,
शायद जहां में और कोई आस्तां नहीं।
क्यों आपके सितम की शिकायत करूं न मैं ?
सीने में दिल नहीं है कि मूंह में ज़बां नहीं।
दैरो-हरम[2] ही में तुझे क्यों ढूंढता फिरूं,
दुनियाये-हस्त[3] में तेरा जलवा कहां नहीं।
क्यों है इसी पे तेरा करम ? ऐ निगाहे-बर्क़ !
क्या गुलसितां में और कोई आशियां नहीं ?
रह कर हमारे ख़ाना-ए-दिल ही में देखिऐ,
दुनिया में कोई और तो ऐसा मकां नहीं।
नाज़ां 'जिगर' ! हूं अपने दिले-दाग़दार पर,
इस बाग़ की बहार को ख़ौफ़े-ख़ज़ां[4] नहीं।

1. अधिकता 2. मन्दिर मस्जिद 3, वर्तमान दुनिया 4. पतझड़ का खटका।

※

उस कूचे में जाने की ये तूने जो ठानी है,
कुछ सोच दिले-नादां ! क्या जान गंवानी है ?
क्या ख़ूब तेरी सूरत, क्या ख़ूब जवानी है,
ये सुबहे-क़यामत[1] है वो सुबहे-सुहानी है ।
अश्कों की खानी पर, ये दाद मिली मुझको,
"बहता रहे महशर[2] तक, क्या साफ़ ये पानी है।"
हाले-शबे-ग़म सुन कर यूं कहने लगा कोई,
"क्या ख़ूब ये क़िस्सा है, क्या ख़ूब कहानी है।"
पलकों ने बहुत रोका लेकिन न रुके आंसू.
तिनकों से ये क्या रुकती ? दरिया की खानी है ।
पैग़ाम तो आया है वो आयेंगे मिलने को,
क्या मुझ को यक़ीं आये, पैग़ाम ज़बानी है ।
जब आह भरी मैंने, आंसू भी तो निकलेंगे,
पुरवायी का चलना भी बारिश की निशानी है।
दिल लूटा हज़ारों का, ली जान भी लाखों की,
चंगेज़ से ज़ालिम-तर उस बुत की जवानी है !
दिल दे के 'जिगर' ! उनको अब जान न दूंगा मैं,
ये फ़ैसला ठहरा है, अब दिल में ये ठानी है ।

---

1. प्रलय का दिन 2. क़यामत

खवाहिशें करता हूं पैदा दिल जलाने के लिये,
बिजलियों को पालता हूं आशियाने के लिये ।
मिल गया सर को वो संगे-दर[1] सरहाने के लिये,
मिल गई मंज़िल मुसाफ़िर को ठिकाने के लिये ।
हसरतों का हो गया है इस क़दर दिल में हजूम,
सांस रस्ता ढूंडती है आने जाने के लिये ।
ज़िन्दगानी में तो दुश्मन ही जलाते हैं मुझे,
मर गया तो दोस्त आयेंगे जलाने के लिये ।
दिल हमारा ले के रख लो अपने दिल के पास तुम,
काम आयेगा तुम्हारे ग़म उठाने के लिये ।
शरहे-ग़म के वास्ते लाज़िम हैं आंसू खून के,
चाहिये रंगीं इबारत इस फ़साने के लिये ।
बैठिये, कुछ अपनी कहिये और कुछ सुनिये मेरी,
आप आते ही हुये बेताब जाने के लिये ।
ये तबस्सुम, ये अदा, ये नाज़, ये चितवन तेरी,
सारे खंजर हैं मेरे दिल पर चलाने के लिये ।
पारसाई[2] छोड़िये अहदे-जवानी में, 'जिगर' !
ये ज़माना होता है पीने पिलाने के लिये ।

. दरवाज़े का पत्थर 2. परहेज़ ।

हम अबस नाला-ए-शबगीर[1] लिए फिरते हैं,
जो खना होता है, वो तीर लिए फिरते हैं।
क़त्ल करने को मुझे एक अदा काफ़ी है,
आप क्यों हाथ में शमशीर लिए फिरते हैं।
जिस तरह लाश उठाए हुए फिरता हो कोई,
उस तरह हम दिले-दिलगीर लिए फिरते हैं।
हुस्न वालों को भी जीने नहीं देते ये लोग,
शमा के क़त्ल को गुलगीर लिए फिरते हैं।
शबे-फ़ुरक़त के अंधेरों का असर क्या हम पर ?
हम तेरी याद की तनवीर[2] लिए फिरते हैं।
दिल से जाने नहीं देते 'जिगर' उस ज़ुल्फ़ का ध्यान,
साथ दीवाने के ज़ंजीर लिए फिरते हैं।

---

1. रात की चीख़ो पुकार 2. रोशनी।

फ़लक[1] की जफ़ाओं से तंग आकर आख़िर,
किया मेरे दिल ने जब इक रोज़ नाला।
ज़मीं तक फ़रिश्तों की आईं सदायें,
"हमें मार डाला, हमें मार डाला" ॥
बड़ी देर के बाद आया हूं साक़ी,
कहां तक तू भर भर के देगा प्याला ?
तकल्लुफ़ को छोड़ और रख दे प्याला,
जो मटका पड़ा है उसी को उठा ला ॥
कहां मद भरी थीं ये तेरी निगाहें ?
कहां तुझ में थीं प्यारी प्यारी अदायें ?
ये सारा करिश्मा मेरे इश्क़ का है,
तेरे हुस्न को जिसने सांचे में ढाला ॥
ये क्या माजरा है, ये क्या मज़्हका[2] है,
ये क्या दोस्ती है, ये क्या दिल्लगी है।
उधर गोशा-ए-दिल में तूने जगह दी,
इधर अपनी महफ़िल से मुझको निकाला ॥
न दे चारागर ! मुझको झूटे दिलासे,
नहीं कुछ भी होने का तेरी दवा से।
अगर चाहता है तू मुझ को बचाना,
अभी उठ के जा और उनको बुला ला ॥
बड़ी चश्मे-गिरियां[3] ने ज़हमत उठायी,
जो दिल में लगी थी न कम होने पायी।
बुझाने की की जिस क़दर हमने कोशिश,
भड़कती गई उस क़दर ये ज्वाला ॥
किया ग़ौर हमने तो ये राज़ जाना,
पुजारी है मुर्दों का ज़ालिम ज़माना।
जिसे उमर भर इसने रक्खा बरहना[4],
मरा जब तो डाला बदन पर दुशाला ॥
'जिगर'! जलवा-ए-यार जब दिल में पाऊं,
तो क्यों इसके आगे न सर को झुकाऊं।
यही मेरा काबा, यही है कनीसा[5],
यही मेरा मन्दिर, यही है शिवाला।

1. आकाश 2. मज़ाक 3. रोती आंख 4. नंगा 5. गिरजा।

अच्छी सूरत से आशनाई की,
हमने बस इक यही बुराई की।
आपसे सुलह करने की ख़ातिर,
हमने ख़ुद से बड़ी लड़ाई की।
ऐसी दौलत है हुस्न जिसके लिए,
बादशाहों ने भी गदाई[1] की।
शिकवा-ए-जौर[2] उनसे कौन करे ?
किस को जुरअत है लब-कुशाई[3] की ?
जी से गुज़रे न आदमी जब तक,
शब गुज़रती नहीं जुदाई की।
आदमी मर के जन्म लेता है,
कोई सूरत नहीं रिहाई की।
वादा-ए-यार तक न साथ दिया,
ज़िन्दगी ने भी बेवफ़ाई की।
तुमसे मिलकर जो मिल रहे हैं मज़े,
मेहरबानी है सब जुदाई की।
ज़िन्दगी जब 'जिगर' ! बनी दुश्मन,
मौत ने हमसे आशनाई[4] की।

1. फ़क़ीरी 2. ज़ुल्म की शिकायत 3. मूँह खोलना 4. दोस्ती।

जब मुक़द्दर ही हो बुरा अपना,
फिर जिगर ! क्या करे किया अपना ?
साथ दे नालाए-रसा[1] ! अपना,
है फ़लक से मुक़ाबिला अपना ।
जब चमन ही उजड़ गया अपना,
क्या बहारों से वास्ता अपना ?
बुत करेंगे बिगाड़ क्या अपना ?
जब मददगार है ख़ुदा अपना ।
तरके-उल्फ़त[2] पे क्या कहूं ? ऐ दिल !
सोच ले ख़ुद बुरा भला अपना ।
ख़ाक में मिल गये सभी अरमां,
लुट गया हाये, क़ाफ़िला अपना ।
इश्क़ से फ़ायदा यही कुछ है,
ज़िकर होता है जा-बजा अपना ।
ऐ 'जिगर' ! इस जहां की महफ़िल में,
नहीं कोई भी आशना अपना ।

---

1. कामयाब फ़रयाद 2. प्यार को छोड़ना ।

ग़म नहीं जो सुनता हूं फब्तियां ज़माने की,
लज़्ज़तें उठाता हूं मैं ही दिल लगाने की।
आप चांद सा मुखड़ा ले के किस दिन आयेंगे ?
दूर होगी तारीकी कब ग़रीबख़ाने की ?
काट कर ज़बां मेरी, लब मेरे भी सी डाले,
दाद ये मिली मुझको हाले-दिल सुनाने की।
ख़ाक होकर उट्ठूगां तेरे आस्ताने से,
बैठा हूं क़सम खाकर तेरे आस्ताने की।
ख़ाक तू सिला देगा बेवफ़ा ! वफ़ाओं का,
जब ख़बर नहीं तुझको क्या बदी है ? क्या नेकी ?
बिजलियों की यूरिश[1] है, आंधियों की शोरिश[2] है,
हमने भी तो रक्खी है तरह[3] आशियाने की।
साथ दिल उड़ाने के होश भी उड़ाते हो,
किस से ये अदा सीखी तुमने मुस्कराने की ?
ले गया जो दिल कोई, इसका ग़म नहीं मुझको,
फ़िकर है 'जिगर' ! अब तो जान को बचाने की।

1. हमले 2. शोर शराबा 3. बुनयाद।

पत्थर है, दिल नहीं वो, कहता हूं मैं यक़ीं से,
होती नहीं महब्बत जिसको किसी हसीं से।
पाबंद हुस्न वाले 'हां' के भी जब नहीं है,
मायूस हो न ऐ दिल उनकी 'नहीं नहीं' से।
जन्नत में इन बुतों सा शायद मिले न कोई,
ऐ काश ! एक दो को ले जा सकूं यहां से।
बे-चारगी है क्या शै, पूछे यह उनसे कोई,
जो पोंछता हो आंसू अपनी ही आस्तीं से।
वो एक संग-रेज़ा[1], यह इक गुले-शगुफ़्ता[2],
मैं चांद को मिला दूं क्योंकर तेरी जबीं से।
कोई नहीं है मुझ सा, हर इक यही कहेगा,
यह बात पूछ देखो बेशक किसी हसीं से।
अश्आर सब 'जिगर' ने क्या दिलनशीं[3] कहे है,
गूंजी है ख़ूब महफ़िल तहसीनो-आफ़रीं[3] से।

1. पत्थर का टुकड़ा 2. खिला हुआ फूल 3. आकर्षक 4. शाबाश।

आंख नहीं वो, जो अश्कबार नहीं है,
दिल ही नहीं वो जो बेक़रार नहीं है।
कौन सी जान आप पर नहीं है तसद्दुक़[1] ?
कौन सा दिल आप पर निसार नहीं है ?
तेरा करम है अगर हिसाब से बाहर,
मेरे गुनाहों का भी शुमार नहीं है।
वादा-ए-फ़रदा[2] से तेरे क्या हो मुसर्रत ?
मुझको तो एक पल का एतबार नहीं है।
कबर में तड़पा रही है फ़िकरे-क़यामत[3],
मर के भी इन्सान को क़रार नहीं है।
जिसमें न गुल-रेज़[4] हो निहाले-तमन्ना[5],
मेरी निगाहों में वो बहार नहीं है।
है यह मेरी बेक़रारियों का तअस्सुर[6],
उनको सुना है, उधर क़रार नहीं है।
मोतबर उस वक्त तक नहीं तेरी वहशत[7],
दामने-हस्ती जो तार तार नहीं है।
है मेरे दिल में यह दर्द शामो-सहर क्यों ?
मुझको 'जिगर'! जब किसी से प्यार नहीं है।

---

1. क़ुरबान 2. कल का वादा 3. प्रलय की फ़िक्र 4. खिलना 5. आशा का पौदा 6. असर 7. दीवानगी।

उसने देखा मेरी आँखों से जो बहता पानी,
हो गया शर्म से दरिया का कलेजा पानी।
आतिशे-ग़म[1] ने किया ख़ुश्क बदन का पानी,
लाख कोशिश पे भी आंखों से न निकला पानी।
वो शबे-हिजर[2] मेरे दीदा-ए-तर को देखे,
जिसने देखा न हो सावन में बरसता पानी।
पांचवें दसवें दिन इस वास्ते रो लेता हूं,
देर तक रुकने से हो जाता है गदला पानी।
अहले-ज़िन्दां[3] करें अश्कों पे गुज़ारा अपना,
क़ैद खानों में यही मिलता है दाना पानी।
अश्क कम होने न पाये मेरी आंखों में कभी,
यह वो दरिया हैं, कभी जिनका न उतरा पानी।
इश्क़ को मैं तो फ़क़त खेल समझता था, मगर
कर दिया उसने मेरा खून पसीना पानी।
तूने ग़रक़ाब[4] किया मुझको, जलाया मुझको,
अश्के-ग़म[5]! अब मैं तुझे आग कहूं या पानी।
ऐ 'जिगर'! हज़रते-साहिर का करम है, वरना,
मुझसे इस सख़त ज़मीं से न निकलता पानी।

---

1. ग़म की आग 2. जुदाई की रात 3. कैदी 4. डुबोना
5. ग़म के आंसू।

महब्बत करके हम पछता रहे हैं,
सज़ा अपने किये की पा रहे हैं।
महब्बत में है दिल रहबर हमारा,
जिधर ले जा रहा है, जा रहे हैं।
उन्हें शक है तेरी रहमत पे शायद,
गुनाह करने से जो घबरा रहे हैं।
वो मेरे सामने आयेंगे क्योंकर,
जो अपने आप से शरमा रहे हैं।
सफ़ीना जिन्दगी का बढ़ रहा है,
तलातुम[1] पर तलातुम आ रहे हैं।
हुई हैं बस्तियां वीरां हज़ारों,
ख़ुदा जाने किधर सब जा रहे हैं।
हम उस बूत की गली में मुद्दतों से,
'जिगर'! ठोकर पे ठोकर खा रहे हैं।

1. थपेड़े।

कौन है और ग़म के मारों का ?
तू सहारा है बे-सहारों का ।
फूल शाख़ों से तोड़ने वालो !
यह तो मतलब न था बहारों का ।
चारागर हार थक के बैठ गये,
अब ख़ुदा ही है ग़म के मारों का ।
है तमन्ना अगर गुलों की तुझे,
ख़ौफ़ फिर दिल में रख न ख़ारों का ।
छोड़ ऐ ना-ख़ुदा ! यह कोशिशे-ख़ाम[1],
शौक़ मुझको नहीं किनारों का ।
फूल क्यों हंस रहे हैं गुलशन में ?
कुछ भरोसा नहीं बहारों का ।
शायद उस मेहर-वश[2] को देखा है,
चेहरा उत्तरा हुआ है तारों का ।
ऐ 'जिगर' ! आजकल की दुनिया में,
कौन है हम से ख़ाक-सारों[3] का ?

---

1. असफ़ल प्रयत्न 2. सूरज जैसा 3. बेचारा ।

जज़बा-ए-दिल को आज़माये कोई,
मेरे पहलू से उठ के जाये कोई ।
दिल किसी का अगर दुखाये कोई,
फिर करे क्यो न "हाय हाय" कोई ।
पहले आईना देख आये कोई,
मुझ पे फिर तोहमतें लगाये कोई,
ज़ुल्म ढाओ, मगर खयाल रहे,
ज़िन्दगी से न तंग आये कोई ।
ख़ुदनुमाई[1] का दरस देता है,
आईने को न मूंह लगाये कोई ।
आतिशे-गुल से जल रहा हैं चमन,
आशियाना कहां बनाये कोई ?
बैठने को जगह नहीं मिलती,
तेरी महफ़िल में ख़ाक आये कोई ?
दिल मिलाना तो बात दूर की है,
आंख से आंख ही मिलाये कोई ।
रूठ जाते हैं बात बात पे वो,
उनको कब तक 'जिगर' ! मनाये कोई ।

1. घमण्ड ।

हैं यह दो चार ज़िन्दगी के दिन,
कट ही जायेंगे आदमी के दिन।
वक़्ते-पीरी[1] ख़याले-ज़ीनत[2] क्या ?
यह तो होते हैं सादगी के दिन।
फूल, हंसता है, शमा रोती है,
कट ही जाते हैं हर किसी के दिन।
कोई यावर[3] न कोई मूनिस[4] है,
क्या मुसीबत हैं बेकसी के दिन ?
तौबा तौबा ! बहार में तौबा ?
यह तो हैं ख़ास मयकशी के दिन।
क्यों गुज़ारे न फूल हंस हंस कर ?
चंद हैं इसकी ज़िन्दगी के दिन।
पारसाई शबाब में है फ़ज़ूल,
ऐ 'जिगर' ! यह हैं मयकशी के दिन।

1. बुढ़ापे में 2. संवरने का ख़्याल 3. मद्दगार 4. हमदम।

अब मेरी उनसे मुलाक़ात नहीं,
अब वो आलम नहीं, वो बात नहीं।
बात क्या है कि मुझ पर ऐ दोस्त !
करमो - लत्फ़ो - इनायत[1] नहीं।
जिस में पोशीदा ग़रज़ हो कोई,
वो मुलाक़ात मुलाक़ात नहीं।
दैरो-काबा[2] में तुझे क्यों ढूंढूं ?
क्या मेरी ज़ात, तेरी ज़ात नहीं ?
जिसमें दौरे-मये-रंगीं[3] न चले,
मेरी नज़रों में वो बरसात नहीं।
देख लेते हैं अगर हम तुमको,
इसमें रंजिश की तो कुछ बात नहीं।
आप तो पूछ रहे हैं वो सवाल,
जिन सवालों के जवाबात नहीं।
जान के आप तलबगार तो हों,
कुछ भी मेरे लिए यह बात नहीं।
जिसमें आंसू न रवां हो जायें,
वो मुनाजात[4], मुनाजात नहीं।
जीते जी हो तेरा दीदार नसीब,
मेरी तक़दीर में ये बात नहीं।
बाज़ी-ए-इश्क़ो-महब्बत में 'जिगर' !
मात भी है तो कोई मात नहीं।

---

1. मेहरबानी 2. मन्दिर मस्जिद 3. रंगीन शराब का दौर 4. दुआ।

गो मुसीबत बहुत उठाई है,
इश्क़ से हमने दाद पाई है।
हम तो मुश्ताक़े-दीद[1] हैं बेशक,
उनको भी शौक़े-ख़ुदनुमाई[2] है।
ज़िन्दगानी कली की कुछ भी नहीं,
फिर भी गुलशन में मुस्कराई है।
दिल मिलाना न था अगर तुमको,
क्यों नज़र से नज़र मिलाई है?
सारी दुनिया को भूल बैठा हूं,
आज यह किसकी याद आई है?
अब तो पानी भी है शराब हमें,
अपनी मस्ती यहां तक आई है।
ऐ 'जिगर'! आज उनके आने से,
मेरे घर भी बहार आई है।

---

1. देखने के इच्छुक 2. नुमाइश का शौक़।

तवक़्क़ो[1] न थी ये ज़माने से पहले,
रुलाएगा यूं वो हंसाने से पहले ।
बड़ा ये करम बर्क़े-सोज़ां[2] का होगा,
जला दे मुझे आशियाने से पहले ।
तमन्नाए-दीदार[3] तक बर न आयी,
अजल आ गई उनके आने से पहले ।
मुझे दिल की ख़ुद्दारियां याद आयीं,
किसी शोख़ के नाज़ उठाने से पहले ।
तेरी जुस्तजू[4] में ये मंज़िल भी आई,
हमीं गुम हुये तुझको पाने से पहले ।
फ़सुरदा[5] भी होना पड़ेगा कली को,
ये समझी न थी मुस्कराने से पहले ।
ज़रा अपना अंजाम भी सोच लेना,
'जिगर' ! ताबे-दीद आज़माने से पहले ।

---

1. उम्मीद 2. फूंकने वाली बिजली 3. दीदार की इच्छा 4. तलाश
5. मुरझाना ।

बर्क़[1] की ज़द में हैं सब गुलशन,
कौन करे तामीर[2] नशेमन[3] ?
लाख आराम क़फ़स में हों फिर भी,
अपना गुलशन, अपना गुलशन।
अश्क मेरे मोती बन जाते,
मिल जाता जो तेरा दामन ।
इस में है तस्वीर तुम्हारी,
तोड़ते क्यों हो दिल का दर्पण ?
फ़र्क़ नहीं कुछ ख़ारो-गुल में,
ये गुलशन है अपना गुलशन ।
किस के जलवे का परतौ[4] है ?
नूर बना है दिल का आंगन ।
दस्ते-जनूं[5] ने इक कर डाला,
चाके-गिरेबां, चाके-दामन ।
पास नहीं तो गुलशन सहरा[6],
पास हो जब तुम, सहरा गुलशन।
दाग़े-'जिगर' के फ़ैज़ो-करम[7] से,
रात अपनी है रोज़े-रोशन ।

1. बिजली 2. बनाना 3. घोंसला 4. परछाई 5. दीवानगी
6. मरुस्थल 7. मेहरबानी।

खा रहा है अब मुझे ये ग़म तेरे आने के बाद,
हाल क्या होगा मेरा तेरे चले जाने के बाद ?
ज़िन्दगी में जो उठा सकते नहीं दो फूल भी,
सैंकड़ों पत्थर उठा लेते हैं मर जाने के बाद ।
पांव फैलाने हैं दुनिया में तो ये भी सोच ले,
हाथ फैलाने पड़ेंगे, पांव फैलाने के बाद ।
आरज़ूओं से कभी ख़ाली न देखा हमने दिल,
और इक दो आ गईं इक दो निकल जाने के बाद ।
जब ख़याले-ज़ोहद[1] आया मुझको मयनोशी[2] के वक़्त,
"तौबा तौबा" कह लिया हर एक पैमाने के बाद ।
मैं न मानूंगा कि ग़म के बाद मिलती है ख़ुशी,
कब कर्म तूने किया मुझ पर सितम ढाने के बाद ?
शैख़ ! इक मसजिद बना ले तू भी मैख़ाने के पास,
ताकि घर जाए ख़ुदा के बंदा बन जाने के बाद ।
जो पराई आग में जल जाये ख़ामोशी के साथ,
आज तक पैदा हुआ कोई न परवाने के बाद ।
ऐ 'जिगर' ! लब पर गिला उनका कभी लाऊं न मैं,
इक करम भी वो जो कर दें सौ सितम ढाने के बाद ।

---

1. परहेज़गारी का ख़्याल 2. मदिरापान ।

हर सांस बनी जाती है आवाज़े-महब्बत,
मुमकिन नहीं अब राज़ रहे राज़े-महब्बत।
अब हम से तो उठने के नहीं नाज़े-महब्बत,
बेहतर है बदल लो तुम्हीं अन्दाज़े-महब्बत।
आहिस्ता ज़रा चोट ये मिज़राबे[1]-सितम की,
हो जाये शकसता न कहीं साज़े-महब्बत।
सुननी ही पड़ेगी, तुम्हें सुननी ही पड़ेगी,
आवाज़े-महब्बत हैं ये, आवाज़े-महब्बत।
वो शमा पे मिटते हुये परवाने को देखे,
देखा न जिसने कोई जांबाज़े[2]-महब्बत!
मनसूर सरे-दार[3] ही सरदार बना है,
क़िस्मत ही से मिलता है ये एज़ाज़े[4]-महब्बत।
'फ़रहाद' से मज़दूर को 'शीरीं की तमन्ना,
देखे तो कोई अज़मतो-एजाज़े[5]-महब्बत।
हंगामाए-नफ़रत[6] है बपा दहर में हर सू,
सुनता नहीं कोई 'जिगर'! आवाज़े-महब्बत।

---

1. सितार बजाने का यंत्र 2. जान पर खेलने वाला 3. सूली पर 4. सम्मान 5. जादू 6. नफ़रत का शोर।

❋

ग़म से घबरा के जो लोग आहो-बुका करते हैं,
इश्क़ के नाम को बदनाम किया करते हैं।
हम सबक़ जीने का फूलों से लिया करते हैं,
चाक सीने हैं, मगर शाद रहा करते हैं।
हुस्न तेरा तो है बेदाग़, ख़ुदा जाने ये लोग,
चांद से क्यों तुझे तशबीह दिया करते हैं ?
तेरे आने से मेरे दिल का कंवल क्यों न खिले ?
जब बहार आती है तो फूल खिला करते हैं ?
बाग़े-हस्ती में ग़रीबों को ज़माने वाले,
ख़ुश्क पत्तों की तरह तोड़ दिया करते हैं।
आपके रुये-मुनव्वर[1] पे फ़िदा क्यों न हो दिल ?
शमा पर शौक़ से परवाने मिटा करते हैं।
ज़िन्दगी अपनी रही तो ये बता देंगे तुझे,
प्यार यूँ होता है, यूँ प्यार किया करते हैं।
कोई क्या है, कोई ये जाने तो कैसे जाने ?
लोग इस दौर के क्या कहते हैं क्या करते हैं ?
फूल में, चांद में, बिजली में, सितारे में 'जिगर'।
हम जहां चाहें उसे देख लिया करते हैं।

---

1. चमकीला चेहरा

जो लोग उजाले को उजाला नहीं कहते,
हम उनको बुरा कहते हैं अच्छा नहीं कहते।
जो जोड़ न दे टूटे हुये तार दिलों के,
हम उसको महब्बत का तराना नहीं कहते।
जीना उसे कहते हैं जो हो औरों की ख़ातिर,
अपने लिये जीने को तो जीना नहीं कहते।
इन्सां के दिलो-ज़हन मुनव्वर[1] न हों जिससे,
हम ऐसे उजाले को उजाला नहीं कहते।
हैरत में कभी जलवे को हम कहते हैं पर्दा,
पर्दे को कभी शौक़ में पर्दा नहीं कहते।
हम तुमसा हसीं कैसे कहें शमसो-क़मर[2] को ?
हर हुस्न को तो हुस्ने-सरापा[3] नहीं कहते।
तुम सामने हो और तुम्हें देख न पायें,
हम ऐसे नज़ारे को नज़ारा नहीं कहते।
दिल रखने को मूंह से यूंही कह देते हैं अच्छा,
दिल से तो 'जिगर' ! वो हमें अच्छा नहीं कहते।

1. रोशनी 2. सूर्य चांद 3. सिर से पाँवों तक हसीन।

तेरे चेहरे पे न हमने कोई पर्दा देखा,
फिर भी तुझको न कोई देखने वाला देखा।
दिल की तह तक किसी सूरत न पहुंचने पाये,
हमने इस क़तरे को दरिया से भी गहरा देखा।
कभी गुलज़ार में वीराने की सूरत देखी,
कभी वीराने में गुलज़ार का नक़्शा देखा।
छा गया पूरी तरह कोई मेरी हस्ती पर,
मैंने हर शै में वही हुस्ने-सरापा देखा।
दिल में आराम से जब चाहा, तुझे देख लिया,
काबा देखा, न कभी हमने कलीसा[1] देखा!
चांद तारों में, चमनज़ारों में, महपारों[2] में,
हमने सूरत तेरी देखी, तेरा जलवा देखा।
हश्र तक हर कोई आराम से सो जाता है,
मौत को सबसे बड़ा हमने मसीहा देखा।
सजदा करते न अगर उसको तो काफ़िर[3] बनते,
हमने उस बुत में निहां जलवा ख़ुदा के देखा।
सब के सब मस्त थे महफ़िल में, किसी ने भी 'जिगर'!
शमा का रोना, न परवाने का जलना देखा।

1. गिरजा 2. चांद के टुकड़े 3. नास्तिक

हज़ूर देखे हैं, हमने जनाब देखे हैं,
ज़मीं में दफ़न कई आफ़ताब[1] देखे हैं।
इशारे करते हैं परदे से बरसरे-महफ़िल[2],
हिजाब वाले बड़े बे-हिजाब[3] देखे हैं।
तेरे बदन की महक है, तेरे बदन की महक,
चमन में लाख महकते गुलाब देखे हैं।
वो कब उठाते हैं सर अपना बहरे-हस्ती[4] में,
शिकसता[5] होते जिन्होंने हबाब[6] देखे हैं।
जनाब को मेरी नज़रों ने जब से देखा है,
न कहकशां[7], न महो-आफ़ताब[8] देखे हैं।
महब्बत आपकी जन्नत भी है, जहन्नम भी,
सवाब[9] देखे हैं इसमें, अज़ाब[10] देखे हैं।
न हुस्न है, न जवानी है पायेदार[11] 'जिगर'!
ग़रुब[12] होते महो-आफ़ताब देखे हैं।

---

1. सूर्य 2. महफ़िल के सामने 3. बेहया 4. जीवन सागर 5. टूटते हुए
6. बुलबुले 7. आकाश गंगा 8. चांद सूरज 9. सुख 10. दुःख
11. मजबूत 12. अस्त होना।

ज़मीने-हिन्द को गुलशन बनाने की ज़रूरत है,
ज़माने में विक़ार[1] इसका बढ़ाने की ज़रूरत है।
चिरागे-इश्क़ सीनों में जलाकर ऐ वतन वालो,
कदूरत के अन्धेरों को मिटाने की ज़रूरत है।
वतन ही सबका मज़हब हो, वतन ही सबकी मिल्लत हो,
तमीज़े-मज़हबो मिल्लत मिटाने की ज़रूरत है।
जीयेंगे क़ौम की ख़ातिर, मरेंगे क़ौम की ख़ातिर,
क़सम ये अब हर इक हिन्दी को खाने की ज़रूरत है।
इकट्ठे हो रहे हैं ये जो ख़िरमन[2] बुग़ज़ो-नफ़रत के,
इन्हें सोज़े-महब्बत[3] से जलाने की ज़रूरत है।
न हिन्दू हैं न मुस्लिम हैं फ़क़त हिन्दोस्तानी हैं,
हर इक हिन्दी को ये नारा लगाने की ज़रूरत है।
तुम्हारी असल जब इक है तो फिर क्यों नस्ल के झगड़े,
ये हक़ की बात हर इक को बताने की ज़रूरत है।
अज़ां[4] मन्दिर से आए, शंख की आवाज़ मस्जिद से,
रहे-हक़[5] में तअस्सुब भूल जाने की ज़रूरत है।
वो गुलशन जिसको सींचा है लहू देकर शहीदों ने,
उसे नफ़रत की आंधी से बचाने की ज़रूरत है।
हवादिस[6] की कड़कती धूप से महफ़ूज़ रखने को,
वतन को एकता के शामियाने की ज़रूरत है।
बजाए रोशनी देने के जो घर फूंक देते हैं,
'जिगर'! ऐसे चिराग़ों को बुझाने की ज़रूरत है।

1. शान 2 खलयान 3. महब्बत की ज्वाला 4. बांग 5 सच्चाई का रास्ता 6. हादिसे।

इन्तिहा-ए-ग़म में रह जाता है तन्हा आदमी,
सर पे सूरज हो तो साया भी नज़र आता नहीं।

—जिगर जालन्धरी